अप्रैल-२०१७ ◆ वर्ष ५ ◆ अंक ११ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अप्रैल-२०१७

सत्यार्थ प्रकाश में
जब यह खोजा
क्या होता है धर्म
महापुरुषों का
करो अनुकरण
यही धर्म का मर्म

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ६४

भारत
के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

०५ श्री राम

सफल जीवन २४

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११८
चैत्र शुक्ल एकादशी
विक्रम संवत्
२०७४
दयानन्दाब्द
१९३

April- 2017

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २६

हलचल २७

०४	वेद सुधा
०८	विश्ववारा आत्रेयी
१०	सत्यार्थप्रकाश में अन्तरिक्ष विज्ञान
१२	देने में सुख
१४	आध्यात्मिक जीवन
१७	महाशय राजपाल जी
१८	रक्त अंकुरण सम्मान
२०	निष्कलंक कर गया
२१	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/१७
२२	बाबा होने का सुख
२३	रामायण अति प्यारी
२८	स्वास्थ्य- अखरोट महौषधि
२९	कथा सरित- संघर्ष के बीज
३०	सत्यार्थ पीयूष- मंत्रियों की योग्यता

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ५ अंक - ११

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

हे अनन्त देव! हम तुझे कैसे हवि दें

का त उपेतिर्मनसो वराय भुवदग्ने शन्तमा का मनीषा।
को वा यज्ञैः परि दक्षं त आप केन वा ते मनसा दाशेम।। - ऋग्वेद. १/७६/१

ऋषिः- गोतमो राहूगणः।। देवता- अग्निः।। छन्दः- निचृत्पंक्तिः।।

हे अनन्त देव ! हम परिमित मनुष्य किसी भी प्रकार से तेरे सम्पूर्ण रूप को ग्रहण नहीं कर सकते। हम अपने अपूर्ण साधनों द्वारा तेरे पास पहुँचने के लिए, तुझे वर लेने के लिए जीवन-भर यत्न ही करते रहते हैं। हमारे मन में यह सामर्थ्य नहीं कि वह तेरे परिपूर्ण रूप का कभी मनन कर सके, फिर तेरे पास पहुँचने का साधन, उपाय हमारे पास क्या है? हम कभी समझते हैं कि

शायद हम हार्दिक भक्ति करके तुझे सुख पहुँचा लेंगे, परन्तु यह तो हमारा तेरे विषय में सांसारिक भाषा में बोलना मात्र है। भक्ति से हमें बेशक बड़ा लाभ मिलता है, परन्तु हमारी हार्दिक प्रार्थनाओं या स्तुतियों का तुझ पर वास्तव में किसी प्रकार का प्रभाव नहीं होता। तू तो शुद्धस्वरूप में अलिप्त रहता है। मनुष्य समझते हैं कि यज्ञ तो बड़ी व्यापक वस्तु है, अतः शायद यज्ञ तेरी परिपूर्ण वृद्धि और बल को ग्रहण करने में पर्याप्त हो सकेंगे, परन्तु ऐसा नहीं होता। तू केवल अपने ही परिपूर्ण यज्ञ से अपने को पा सकता है, परन्तु मनुष्य के लिए यज्ञ तो कभी ऐसे परिपूर्ण नहीं हो सकते कि उन यज्ञों से तेरी अनन्त महत्ता का, तेरे अनन्त बल का पार पाया जा सके। ये सब यज्ञ कुछ-कुछ अंश में ही तुझे व्याप्त कर पाते हैं। हम तो बेशक तेरे उतने अंश की प्राप्ति से ही कृतकृत्य हो जाते हैं-'प्यासे को तो एक लोटा-भर पानी पर्याप्त है, उसे समुन्द्र की गहराई मापने की क्या आवश्यकता है?' परन्तु सत्य यह है कि हम तेरी गहराई को माप नहीं सकते; यज्ञ भी इसमें असमर्थ हैं। यह क्यों न हो? क्योंकि सब स्तुति, भक्ति और यज्ञ आदि हम अपने मन द्वारा ही तो करते हैं; और इस हमारे मन में शक्ति ही कितनी है! अतः यह कहना चाहिए कि हमारा मन ही तुम्हारे योग्य नहीं है। मनुष्य के क्षुद्र मन की तुम अगम तक पहुँच ही नहीं है। फिर वह तन हम कहाँ से लाएँ जिस द्वारा हम अपनी यह भक्ति व ज्ञान की आहुति तुझ तक पहुँचा सकें? ओह! सचमुच यह स्थूल और सूक्ष्म शरीरों में बँधा हुआ मनुष्य तेरी परिपूर्ण उपासना- तेरी परिपूर्ण आराधना- कभी नहीं कर सकता।

शब्दार्थ- अग्ने- हे अग्ने! ते मनसो वराय- तेरे मन को वरने के लिए, का उपेतिभुवत्- कौन-सा उपाय- तेरे पास पहुँचने का कौन-सा साधन है? का मनीषा शंतमा- और हमारी कौनसी हार्दिक इच्छा या स्तुति तेरे लिए सुखकारी हो सकती है? को वा- अथवा कौन मनुष्य है जो, यज्ञैः ते दक्षं परि- यज्ञ कर्मों द्वारा तेरी वृद्धि या बल को व्याप्त कर सकता है, इसके लिए पर्याप्त होता है? केन वा मनसा ते दाशेम- या हमारे पास वह मन ही कौन-सा है, जिससे हम तुझे हवि दे सकें?

साभार- वैदिक विनय

नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

अहं अत्र आगत्य बहु सम्यक् अनुभवं प्राप्तवान् अस्मि। 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' एतेषां विषये ज्ञानं प्राप्तवान्। एतेषां शिक्षया सर्वे जनाः स्वस्य उन्नतिं प्राप्स्यति। एतैः मानवसमाजस्य कृते या शिक्षा दत्ता। सा शिक्षा अस्माकं कृते अपि आवश्यकी। इति विचिन्त्य अहं अत्र आगतवान्। दयानन्द सरस्वती द्वारा वेदस्य उपदेशेन संस्कृतस्य अथाह ज्ञानविषये शिक्षां प्रदत्ता। अतः अत्र आगत्य कृतार्थो अस्मि। इति जयतु भारतम्।

- नन्द बिहारी, जिला बारां, चलभाष- ९८७५०३७००७

मुझे यह सब जानकर, देख कर बहुत जानकारी मिली। अभी तक हम जितना जानते थे काफी नहीं था, वास्तविक ज्ञान यहाँ आकर मिला। ये ज्ञान पाकर मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई और नवलखा महल की ब्रान्च वर्ल्ड के हर कोने में होनी चाहिए। जहाँ हर इंडियन अपने भारतवर्ष के बारे में जान सके। इंडियन ही नहीं बल्कि वर्ल्ड का हर मनुष्य, भारत के नागरिक अपने इतिहास के बारे में किसी विदेशी को या स्वदेशी को पूरा विवरण दे सकें। आज तो हमारे भारतीय भी बहुत कम जानते हैं।

इसलिए मैं चाहता हूँ इस पहल का बहुत विकास हो। यहाँ जानकारी बढ़ाई जाए। जैसे हर बड़े ऋषि-मुनि व अच्छे राजा, खेल आदि के बारे में विवरण हो।

- हाफिज खान, चलभाष-७६६५२६६६८९

आत्म निवेदन

सार्वकालिक रोल मॉडल श्री राम

प्रायः मानव स्वभाव देखा जाता है कि वह उनका अनुकरण करता है जिनकी वह प्रशंसा करता है। जिनसे वह प्रभावित होता है। चाल-ढाल, पहनावा ही क्या वह हर क्षेत्र में उनकी 'कॉपी' करना चाहता है। यही 'वे' उसके रोल मॉडल होते हैं। अगर ये रोल मॉडल उच्च्य चरित्र का मालिक है तो अनुकरण कर्त्ता जीवन को श्रेष्ठ गति देने में सफल हो जाते हैं। रोल मॉडल दुश्चरित्र लोग भी हो सकते हैं और इससे बड़ा कोई दुर्भाग्य नहीं हो सकता, क्योकि उनका अनुकरण उसे पतन के मार्ग पर ले जाता है।

बच्चा सबसे अधिक अपने माता पिता के पास रहता है और अनेक बार उसके माता या पिता ही उसके रोल मॉडल बन जाते हैं। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने अपनी अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि .. 'वह कुल धन्य, वह संतान बड़ा भाग्यवान कि जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों'।

उदाहरण के रूप में हम डॉ. प्रकाश आम्टे का जिक्र करें जिन्होंने अपनी पत्नी के साथ ऐसे आदिवासी विपन्न इलाके में उन लोगों की सेवा में जीवन अर्पित किया है जहाँ बिजली तक नहीं है वहाँ उन्होंने बिना आधुनिक औजारों के सर्जरी भी की है तथा पशुओं को भी आसरा दिया है। डॉ. प्रकाश के निकट उनके पिता बाबा आम्टे ही रोल मॉडल हैं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन कुष्ट रोगियों की सेवा में अर्पित कर दिया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में वीर सावरकर, श्याम जी कृष्ण वर्मा, महात्मा गाँधी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, सरदार भगत सिंह आदि सहस्रों के रोल मॉडल बने। पर आज यह स्थिति नहीं है। आज के युवा के रोल मॉडल वही हैं जिन्होंने अधिकाधिक भौतिक समृद्धि को अर्जित किया है। अतः उनका लक्ष्य भी मात्र रातों रात सम्पदा प्राप्त करना है। ज्यादातर चलचित्र अभिनेता वर्ग आज के युवा के रोल मॉडल हैं जिनकी रील लाइफ तथा रियल लाइफ में जमीन-आसमान का अंतर है। इसीलिए आज युवा अपने लक्ष्य को लेकर स्पष्ट नहीं है भ्रम का शिकार है।

जिन लोगों ने अपना स्वार्थ त्याग औरों के लिए जीवन-सर्वस्व लुटाया है वे यदि समाज में अधिकांश के द्वारा रोल मॉडल माने जाते हैं तो वह समाज ऊर्ध्वगति प्राप्त करने की दिशा में निरन्तर गति करता रहता है, वहाँ आपसी सौहार्द, भाईचारा और शान्ति का साम्राज्य रहता है। अतः समाज का नेतृत्व इन गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए।

इस माह ५ अप्रैल को श्री राम नवमी है। राम नवमी के इस पवित्र अवसर पर हम स्मरण करें तो राम-राज्य का खाका हमारे सामने उभर कर आता है। ऐसा राज्य जिसके बारे में तुलसी ने अपने मानस में निःसंकोच लिखा है।

दैहिक, दैविक, भौतिक तापा, राम राज नहीं काहुहिं व्यापा।

कितना बड़ा दावा है पर है बिलकुल सत्य। कारण स्वयं राजा अर्थात् श्री राम ही अयोध्या में सबके रोल मॉडल थे। अगर रोल मॉडलों की तुलना की जाय तो राम सार्वकालिक श्रेष्ठतम रोल मॉडल सिद्ध होंगे। एक ऐसा राजकुमार जो सौन्दर्य, पराक्रम, क्षत्रियोचित ही नहीं मानवीय उदात्त गुणों में अतुलनीय हो, ऐसा कि जिस सभा में खड़ा हो जाय फिर उससे नजर हट ही नहीं पाए यहाँ तक कि विपन्न अवस्था में भी जो अपनी आभा नहीं खोये। स्मरण कीजिए जब श्री राम व लक्ष्मण सीता-अपहरण के पश्चात् अत्यन्त दुःखी अवस्था में ऋष्यमूक पर्वत पहुँचते हैं तो सुग्रीव हनुमान से कहते हैं-

हे हनुमान! दीर्घ बाहु, विशाल नेत्र, धनुष बाण और कृपाणधारी, देवपुत्रों के सामान इन दोनों को देखकर किसको भय नहीं होगा। रेखांकित करने वाली बात यह है कि सुग्रीव की यह राय श्री राम की विपन्न अवस्था के समय की है।

जादू तो वह जो सर चढ़कर बोले। अपने तो अपनों की प्रशंसा करते देखे ही जाते हैं श्रेष्ठतम तो वही है जिसकी प्रशंसा शत्रु भी करे।

जब सीता अपहरण की दूषित योजना को लेकर सहाय प्राप्त करने रावण मारीच के पास जाता है तो शत्रु पक्ष का होते हुए भी मारीच स्पष्ट कहता है-

रामो विग्रहवान् धर्मः साधुः सत्यपराक्रमः, राजा सर्वस्य लोकस्य देवानां मघवानिवः। - अरण्य/२४/७

अर्थात् राम धर्म की साक्षात मूर्ति हैं, वह साधु स्वभाव और सत्य पराक्रमी हैं। जिस प्रकार इन्द्र देवताओं के राजा हैं उसी प्रकार राम सम्पूर्ण लोक के स्वामी हैं ।

राम के शील की क्या बात करें। वह तो शत्रु के निकट भी श्लाघ्य है। हमारे उपदेशक वृन्द सुनाते हैं कि जब रावण ने सीता जी को अशोक वाटिका में रखा था प्रायः अपनी पटरानी बनाने के लिए धमकाता रहता था। उसे सलाह दी गयी कि सीता का मन श्री राम में रमा हुआ है तुम तो मायावी हो राम का रूप धारण कर सीता के समक्ष चले जाओ वह तुम्हें राम समझ स्वीकार कर लेंगीं। तब रावण का क्या जबाब था- देखें

मैंने यह करके भी देख लिया। पर जब-जब भी मैंने राम का वेश बनाया तब परायी नारी (सीता) ही मुझे माता के समान लगने लगी।

वस्तुतः राम आसमान से पैदा नहीं होते, उनका निर्माण किया जाता है। अयोध्या में ऋषि वशिष्ठ के निर्देशन में और तत्पश्चात् ऋषि विश्वामित्र की देखरेख में राम के व्यक्तित्व का विकास हुआ। संस्कारों का आधान बचपन से ही किया जाता है। ऐसा किया गया तभी बाल्मीकि कह सके-

सर्वे वेदविदः शूराः सर्वे लोकहिते रताः, सर्वे ज्ञानोपसम्पन्नाः सर्वे समुदिता गुणैः। - बालकाण्ड/६/१५

सभी राजकुमार वेद के जानने वाले, शूरवीर परोपकारी ज्ञानी और गुण संपन्न थे। अयोध्या में किस बात की कमी थी परन्तु राम के व्यक्तित्व का विकास कोमल गुदगुदे विस्तरों पर नहीं वरन् शुष्क धरती के बिछोने पर हुआ।

प्रभातायाँ तु शर्वयां विश्वामित्रो महामुनिः, अभ्यभाषत काकुत्स्थौ शयानौ पर्ण संस्तरे। - बालकाण्ड/१४/१

अर्थात् 'रात्रि व्यतीत होने पर विश्वामित्र सूखे पत्तों के विछौने पर सोये हुए राम-लक्षमण से बोले'-

यही कारण है कि राम के लिए अयोध्या के राजभवन तथा वन की उपत्यकाओं में कोई अंतर न था। उन्होंने राज्याभिषेक की घोषणा को भी सहजता से लिया उसी सहजता से वनवास के आदेश को।

ऋषि बाल्मीकि लिखते हैं-

न वनं गंतुकामस्य त्यजतश्च वसुन्धराम्, सर्वलोकातिगस्येव लक्ष्यते चित्तविक्रिया। - बालकाण्ड/१६/२५

यद्यपि श्री राम अखिल पृथिवी का राज्य छोड़ कर वन जा रहे थे तथापि जीवन्मुक्त महायोगीश्वर की भाँति उनके मन में किसी प्रकार का विकार किसी को नहीं दिख रहा था। यह थी राम की महानता।

प्रभु भक्त राम उपासनादि नैत्यिक कर्मों में कभी प्रमाद न करें। ऐसा अभ्यास उन्हें बचपन से ही कराया गया था। देखें तुलसी लिखते हैं-

विगत दिवस मुनि आयसु पाई, संध्या करन चले दोऊ भाई।

ऐसे राम अयोध्या की जनता के दिलों में राज्य करते थे। जब राम वन जाने लगे तो अयोध्या के लोगों की ही नहीं पशुओं की क्या दशा हुयी यह महर्षि बाल्मीकि के शब्दों में जानें।

प्रतियाते महारण्यं चिररात्राय राघवे, बभूव नगरे मूर्छा बलमूर्छा जनस्य च।
ततः सबालवृद्धा सा पुरी परम पीड़िता, राममेवाभिद्रुद्राव धर्मार्ता सलिलं यथा।। - बालकाण्ड/३३/१३-१४

अर्थात् श्री राम के वनवासी होने पर सभी व्याकुल हो उठे, हाथी पागल हो गए, घोड़े हिनहिनाने लगे और सम्पूर्ण अयोध्या नगरी शब्दायमान हो उठी। अयोध्या के सभी बालक और बूढ़े व्याकुल हो श्रीराम के रथ के पीछे वैसे ही दौड़ने लगे जैसे धूप से संतप्त व्यक्ति पानी की ओर दौड़ता है।

ऐसे लोकप्रिय, गुणसम्पन्न राम यदि वन जाना नहीं चाहते तो कौनसी ऐसी शक्ति थी जो उन्हें विवश कर सकती थी? पर राम राम थे। इसीलिए हमने उन्हें सार्वकालिक रोल मॉडल कहा है। दुनिया में ऐसा उदाहरण कहाँ मिलेगा।

आज के युग की रामायण तो उत्तर प्रदेश के सर्वोच्च व्यक्तित्व द्वारा लिखी गयी जब उसने अंगुली पकड़ कर राजनीति में चलना सिखाने वाले, सत्ता के शीर्ष पर बिठाने वाले पिता को ही दल से निष्कासित कर दिया। अखिलेश भी निश्चितरूपेण सहस्रों युवाओं के रोल मॉडल होंगे पर यह इकलौता कदम उन पर प्रश्नचिह्न लगा देता है।

श्री राम के गुणों का वर्णन राम-रावण युद्ध प्रकरण में गोस्वामी तुलसी दास जी ने श्री राम के विजय रथ के क्रम में अत्यन्त उत्तमता के साथ किया है। देखें-

जब विभीषण को संदेह हुआ कि रावण तो सुसज्जित रथ पर सवार है पर श्री राम के पास रथ नहीं है तो वे अपने मन का संदेह प्रकट करते हुए कह ही देते हैं-

रावनु रथी विरथ रघुवीरा , देख विभीषन भयहु अधीरा। अधिक प्रीति मन भा संदेहा , बंदि चरन कह हित सनेहा ।।
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना,केहि विधि जितब बीर बलवाना। सुनुह सखा कह कृपा निधाना ,जेहि जय होई सो स्यंदन आना ।।

बिभीषण की इस शंका के समाधान में राम के विजय रथ के रूप में उनके गुणों का वर्णन अत्यन्त मनोहारी और श्री राम के व्यक्तित्व को स्पष्ट करने वाला है। पाठक आनन्द और प्रेरणा लें।

सौरज धीरज तेहि रथ चाका , सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका,
बल विवेक दम परहित घोरे , क्षमा कृपा समता रजु जोरे।
ईस भजनु सारथी सुजाना , बिरति चर्म संतोष कृपाना,
दान परसु बुधि शक्ति प्रचंडा , वर विज्ञान कठिन कोदंडा।
अमल अचल मन त्रोन समाना, सम जम नियम सिली मुख नाना,
कवच अभेद विप्र गुरुपूजा , एहि सम विजय उपाय न दूजा।
महा अजय संसार रिपु , जीत सकइ सो वीर,
जाके अस रथ होई दृढ़, सुनहु सखा मति धीर ।।

अर्थात् शौर्य और धैर्य उस रथ के पहिये हैं सत्य और शील उस रथ की सुदृढ़ ध्वजा और पताका हैं। बल, विवेक, इन्द्रिय दमन और परोपकार ये चार उसके घोड़े हैं जो क्षमा, दया, समतारूपी डोरी से रथ से जुड़े हुए हैं। ईश-भक्ति ही चतुर सारथी है तथा वैराग्य ढाल है और संतोष तलवार। बुद्धि प्रचण्ड शक्ति है, श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष है।

निर्मल तथा निश्चल मन तरकस के सामान है। शम (मन का वश में होना), अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह- ये पाँच यम तथा शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान ये पाँच नियम- ये सब बहुत से बाण हैं। विद्वान् ब्राह्मण और सत्योपदेष्टा गुरु का पूजन (यथोचित सत्कार) ही अभेद्य कवच है। इसके समान विजय का दूसरा उपाय नहीं।

पाठक गण विचार करें ऐसे मानवीय उदात्त मूल्यों से संपृक्त श्रीराम जिस जाति के सार्वकालिक रोल मॉडल हों उसे विश्व में प्रथम होने से कौन रोक सकता है?

इतने सद्गुणों के आभूषणों से सुसज्जित होने पर भी राम की विनम्रता श्लाघनीय है। वे यथावसर शत्रु की प्रशंसा करने से भी नहीं चूकते।

जिस शत्रु ने प्राणों से प्रिय सीता जी को त्रास दिया, जिसने राम को कौनसा ऐसा कष्ट था जो न दिया हो पर जब वह रावण परास्त होकर मारा गया तो राम विभीषण से जो कहते हैं वह ध्यान-योग्य है।

यद्यपि यह रावण पापी और मिथ्यावादी था तथापि यह बलवान, तेजस्वी और शूरवीर था ....जब तक मनुष्य जीवित होता है तभी तक उसके साथ वैर रहता है, मरने पर वैर भी समाप्त हो जाता है ......अतः तुम इसका सम्मानपूर्वक अंत्येष्टि संस्कार करो।

काश आज के युवा-आबाल-वृद्ध श्री राम को अपना रोल मॉडल मानकर उनके चरित्र से अल्पांश भी ग्रहण कर लें तो भारत का चरित्र ही बदल जाय। फिर कौन उसे विश्वगुरु होने से रोक पायेगा। परन्तु राम को ईश्वर बनाकर मंदिरों में बिठा देने से वे प्रेरणा-पुरुष नहीं रह जाते। इस धरा को यदि स्वर्ग बनाना है तो आवश्यकता उनके उदात्त गुणों को जीवन में स्थान देने की है। कविवर मैथिली शरण गुप्त ने श्री राम के बारे में सही लिखा है-

सन्देश नहीं मैं स्वर्गलोक से लाया, इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया

आयें हम सब श्रीराम चरित्र के उपासक बनें ,राम नवमी के पावन पर्व पर यही हमारा विनम्र अनुरोध है।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

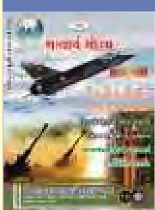

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १९ पर देखें।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

परोपकार का पुण्य बहुत है,
बनते सारे काम।
प्रभु की दया दृष्टि हो जाती,
जग में होता नाम।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

विश्ववारा आत्रेयी

महर्षि अत्रि के कुल में उत्पन्न आत्रेयी ब्रह्मवादिनी थीं। उन्होंने वेदों का गम्भीर अध्ययन किया था। उनका ऋग्वेद और यजुर्वेद पर समान अधिकार था। वह ऋग्वेद मण्डल ५ सूक्त २८ की द्रष्टी हैं। इस सूक्त में ६ ऋचाएँ हैं। इस सूक्त की पहली ऋचा में बतलाया गया है कि जिस सूर्य को हम देखते हैं वह कई तत्त्वों से मिलकर बना है और मुख्य रूप से विद्युत ऊर्जा पर आश्रित है। इसी के प्रभाव से दिन और रात होते हैं। यही हमें दिशाओं का बोध कराता है।

समिद्धो अग्निर्दिवि शोचरश्रेत्प्रत्यङ्ङुषसमुर्विया वि भाति।
एति प्राची विश्ववारा नमोभिर्देवाँ ईळाना हविषा घृताची।।

- ऋ. ५.२८.१

पदार्थ- हे मनुष्यो जो (समिद्धः) प्रज्ज्वलित किया गया (अग्निः) अग्नि (दिवि) प्रकाश में (शोचिः) विद्युत रूप प्रकाश का (अश्रेत्) आश्रय करता है और (उर्विया) अनेक रूप वाले प्रकाश से (उषसम्) प्रभात काल के (प्रत्यङ्) प्रति चलने वाला (वि भाति) विशेष कर शोभित होता है और (विश्ववारा) संसार को प्रकट करने वाली (देवान्) श्रेष्ठ गुणों को (इलाना) प्रशंसित करती हुई

(घृताची) रात्रि और (प्राची) पूर्व दिशा (हविषा) दान और (नमोभिः) अन्नादि पदार्थों के साथ (एति) प्राप्त होती है उस अग्नि को और उस विश्ववारा को आप लोग विशेष करके जानो।

भावार्थ- हे मनुष्यो। हमें यह जो सूर्य दिखाई देता है उसे अनेक तत्वों के द्वारा ईश्वर ने बनाया है और यह विद्युत पर आश्रित है। इस सूर्य के प्रभाव से ही दिशाएँ विभक्त की जाती हैं दिन-रात्रि भी इसी के प्रभाव से होते हैं इस अग्नि रूप सूर्य को जानो।

इस वर्णन से लगता है कि विश्ववारा नभ वैज्ञानिक थीं। अगले मंत्र में कहा गया है- हे विद्वानों! वेद का प्रचार करते हुए यश को प्राप्त करो।

समिध्यमानो अमृतस्य राजसि हविष्कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये।
विश्वं स धत्ते द्रविणं यमिन्वस्यातिय्यमग्ने नि च धत्त इत्पुरः ।।२।।

- ऋ. ५.२८.२

पदार्थ- हे (अग्ने) विद्वान्! जिससे (समिध्यमानः) उत्तम प्रकार निरन्तर प्रकाशमान आप (अमृतस्य) कारण अथवा जल के मध्य में (राजसि) प्रकाशित होते हो और (स्वस्तये) सुख के लिए (हविः) खाने योग्य वस्तु को (कृण्वन्तम्) करते हुए का (सचसे) सम्बन्ध करते हो तो और आप (विश्वम्) सम्पूर्ण (द्रविणम्) धन वा यश का (धत्ते) धारण करते हो तथा (यम्) जिन को (आतिथ्यम्) अतिथि सत्कार (इन्वसि) व्याप्त होता है और (पुरः) पहिले (च) भी आप (निधत्ते) निरन्तर धारण करते हो इससे (य इत्) वही आप सत्कार करने योग्य हो।

अगले मंत्र में कहा गया है कि हे धर्म्मिष्ठो। हम लोग आपके लिए बड़े ऐश्वर्य की इच्छा करें। आप दोनों स्त्री-पुरुष जितेन्द्रिय धर्म्मात्मा बलवान और पुरुषार्थी होकर सम्पूर्ण दुष्टों की सेना को जीतिए।

समिद्धस्य प्रमहसोऽग्ने वन्दे तव श्रियम्।
वृषभो द्युम्नवाँ असि समध्वरेष्विध्यसे।।

- ऋ. ५/२८/४

पदार्थ- हे (अग्ने) राजन्! जो तुम (वृषभः) बलिष्ठ और (द्युम्नवान्) यशस्वी (असि) हो। (अध्यरेषु) राज्य के पालन आदि व्यवहारों में (सम् इष्वसे) प्रकाशित किए जाते हो उन (समिद्धस्य) प्रकाशमान और (प्रमहसः) प्रकृष्ट बड़े (तब) आपके (श्रियम्) धन को मैं (वन्दे) प्रशंसा करता हूँ।

अगले मंत्र में कहा गया है कि जैसे सूर्य आदि रूप में अग्नि सब की रक्षा करता है वैसे ही राजा को प्रजा की रक्षा करनी चाहिये। अगला मंत्र शिल्प विद्या के सम्बन्ध में है।

आ जुहोता दुवस्यताग्निं प्रयत्यध्वरे।
वृणीध्वं हव्यवाहनम्।।

- ऋ. ५/२८/६

पदार्थ- हे विद्वानों! आप लोग (प्रयति) प्रयत्न से साध्य (अध्वरे) विद्यादि व्यवहार में (हव्य वाहनम्) उत्तम पदार्थों को प्राप्त कराने वाले (अग्निम्) अग्नि का (दुवस्यत्) परिचरण करो अर्थात् युक्ति से उसे काम में लाओ। (वृणीध्वम्) स्वीकार करो तथा अन्य जनों के लिए (आ, जुहोता) ग्रहण करो।

इस वर्णन से ज्ञात होता है कि विश्ववारा अग्नि विद्या Heat की भी विद्वान् हैं।

अब हम विश्ववारा द्वारा किए गये यजुर्वेद के कार्य को देखते हैं। विश्ववारा ने यजुर्वेद अध्याय ३३ मंत्र संख्या १२ पर कार्य किया है।

अग्ने शर्द्ध महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु।
स जास्पत्यꣳ सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महाꣳसि।।

पदार्थ- (अग्ने) हे विद्वान् वा राजन्! आप (महते) बड़े (सौभगाय) सौभाग्य के लिए (शर्द्ध) दुष्ट गुणों और शत्रुओं के नाश बल को (आ कृणुष्व) अच्छे प्रकार उन्नत कीजिए। जिससे (तव) आपके (द्युम्नानि) बल वा यश (उत्तमानि) श्रेष्ठ (सन्तु) हों। आप (जास्पत्यम्) स्त्री पुरुष के भाव को (सुयमम्) सुन्दर नियम युक्त (सम् आ) सम्यक् अच्छे प्रकार कीजिए। (शत्रूयताम्) शत्रु बनने की इच्छा करते हुए मनुष्यों के (महांसि) तेजों को (अभितिष्ठ) तिरस्कृत कीजिए। सिद्ध हुआ कि विश्ववारा वैज्ञानिक थीं। इति।

-शिव नारायण उपाध्याय
कोटा

ओ३म्

www.facebook.com/DayanandParadise/

Dayanand Paradise

An English Medium Day Boarding Cum Residential School

Unique Blend of Vedic Culture & Modern Education

'दयानन्द पैरेडाईज' मूल्यों एवं प्राचीन वैदिक शिक्षा और उत्तम आधुनिक शिक्षा का अद्भुत मिश्रण है। हम दयानन्द पैरेडाईज की उत्तम आधुनिक शिक्षा और उच्च नैतिक मूल्यों के माध्यम से आने वाले कल के प्रतिनिधि तैयार करने का संकल्प लेते है।

सुरेशचन्द आर्य
अध्यक्ष, दयानन्द विद्यापीठ ट्रस्ट आबूरोड

ADMISSION OPEN

Nursery to Grade VI

DAYANAND VIDYAPEETH CAMPUS
Opposite to Bhadra-Kali Mandir, Rishikesh Road , AbuRoad, Distt.-SIROHI, RAJASTHAN-307510
Contact No : 07340212012, 09887008563
E-Mail Address : dayanandparadise@gmail.com
Website : www.dayanandparadise.com

सत्यार्थप्रकाश में अन्तरिक्ष विज्ञान

सत्यार्थप्रकाश संसार की सर्वोत्तम पुस्तक है। इसमें सभी धर्म, विचार, इतिहास, सृष्टि उत्पत्ति, सत्यधर्म, अधर्म के साथ साथ अनेक विषयों का समीक्षात्मक वर्णन किया गया है। इसी कारण से यह ग्रन्थ संसार में लोकप्रिय हुआ। आज संसार की लगभग सभी भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।

सत्यार्थप्रकाश अनेक विषयों का भंडार है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में अन्तरिक्ष विज्ञान का भी उल्लेख किया है। यह सम्पूर्ण सृष्टि पंच महाभूतों के आधार पर सृजित हुई है। पंच महाभूत आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी हैं। यह पंचतत्व परमाणु रूप में सम्पूर्ण सृष्टि में विद्यमान हैं। इन परमाणुओं के मिलन से ही अन्तरिक्ष के लोक लोकान्तर का सृजन हुआ है। जिस प्रकार पृथ्वी पर ईश्वर, जीव, प्रकृति के आधार पर प्राणी जगत् का निर्माण हुआ उसी प्रकार अन्य लोक लोकान्तरों में भी प्राणी जगत् का सृजन हुआ ही होगा।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में 'सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय' विषय पर अपना विमर्श प्रस्तुत किया है। उन्होंने वेदों के आधार पर सत्य जनता के सामने रखा कि यह सृष्टि बनती बिगड़ती रहती है। जैसी पूर्व कल्प में सूर्य, चन्द्रमा और लोक लोकान्तर और उसमें रहने वाले प्राणियों का निवास था वैसा ही वर्तमान कल्प में है और यह प्रवाह निरन्तर जारी रहता है। सत्यार्थप्रकाश में इस प्रश्न का समाधान उचित ही किया है। ईश्वर ने यह सृष्टि क्यों बनाई अगर नहीं बनाता तो वह आराम से रहता, उसका उत्तर उन्होंने सत्य ही दिया है कि यह आलसी और दरिद्र लोगों की बातें हैं, पुरुषार्थी की नहीं। प्रलय में जीवों को क्या दुःख है और क्या सुख? जो सृष्टि में सुख और दुःख की कल्पना की जाये तो सुख कई गुणा अधिक होता है। पवित्रात्मा जीव मुक्ति-साधन अपना कर मोक्ष के आनन्द को भी प्राप्त होते हैं। जिस प्रकार दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होता है वैसे ही सृष्टि बनती बिगड़ती रहती है।

यहाँ यह भी उल्लेख महर्षि ने किया है कि ब्रह्माण्ड में एक ही सूर्य रहता है जो सभी लोक लोकान्तर को प्रकाशित करता है। इससे यही सिद्ध होता है कि इस सृष्टि में अनेक सूर्य होंगे, वैज्ञानिकों ने यह भी खोज की है कि हमारे ब्रह्माण्ड के बाहर भी पृथ्वी जैसे ग्रह हैं। जहाँ पहुँचने में कई प्रकाश वर्ष लग जावेंगे। इस प्रकार अनेक सूर्य होकर सभी ग्रह उनके आसपास चक्कर लगा रहे हैं। इस विशाल अपरिमित आकाश में अनेक आकाश गंगाएँ हैं। उनमें सूर्य, चन्द्रमा, तारे, नक्षत्र होंगे। आज वैज्ञानिकों ने अनेक रहस्यों को

उजागर कर दिया है। आकाश गंगाओं के ग्रहों पर पहुँचने के लिए मन की गति के विमान चाहिए। इस मानव देह से हम पहुँच नहीं सकते। हमारी देह उतनी स्थायी और सक्षम नहीं है। हो सकता है कि विचारशील मानव आसमान की सीमाओं को तोड़ कर वहाँ तक पहुँच जाये? वहाँ तक पहुँचने में अनेक पीढ़ियाँ व्यतीत हो जावेंगी।

महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में यह प्रश्न उठाया है कि सूर्य, चन्द्र और तारे क्या वस्तु हैं और उनमें मनुष्यादि सृष्टि है वा नहीं? क्योंकि:-

एतेषु हीदꣳ सर्वं वसुहितमेते हीदꣳ सर्वं वासयन्ते।
तद्यदिदꣳ सर्वं वासयन्ते तस्माद्वसव इति। - शत.१४/६/७/४

पृथ्वी, द्यौ, अग्नि, वायु, अन्तरिक्ष, चन्द्र, नक्षत्र, सूर्य इनका नाम वसु इसलिये है कि इन्हीं में सब पदार्थ और प्रजा बसती है और ये ही सबको बसाते हैं। इसलिए वास के, निवास करने के घर हैं। इसलिए इनका नाम वसु है। जब पृथ्वी के समान सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र वसु हैं पश्चात् इनमें इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या संदेह है? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा लोक मनुष्यादि सृष्टि से भरा पड़ा है तो क्या यह सब लोक शून्य होंगे? परमेश्वर का कोई भी काम निष्प्रयोजन नहीं होता तो क्या इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न हो तो कभी सफल हो सकता है? इसलिए सर्वत्र मनुष्यादि सृष्टि है। महर्षि ने यह भी स्पष्ट किया है कि पृथ्वी के

अलावा लोक लोकान्तरों में रहने वाले मनुष्यादि सृष्टि की आकृति में भेद संभव है। जैसे इस देश में चीनी, हब्शी और आर्यावर्त्त, यूरोप में अवयव और रूप रंग, आकृति का भी थोड़ा-थोड़ा भेद होता है। इसी प्रकार लोक लोकान्तर में भी

भेद होते हैं। परन्तु जिस जाति की जैसी सृष्टि इस देश में है वैसी जाति ही की सृष्टि अन्य लोकों में भी है जिस जिस शरीर के प्रदेश में नेत्रादि अंग हैं उसी-उसी प्रदेश में लोक लोकान्तर में भी उसी जाति के अवयव भी वैसे ही होते हैं क्योंकिः-

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥ - ऋग्वेद १०/१९०/३

परमात्मा ने जिस प्रकार के सूर्य, चन्द्रमा, द्यौ, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और तथस्थ सुख विशेष पदार्थ पूर्व कल्प में रचे थे वैसे ही इस कल्प अर्थात् इस सृष्टि में रचे हैं तथा सब लोक लोकान्तरों में भी बनाया है।

महर्षि का यहाँ तक दावा है कि जिस प्रकार हमारी पृथ्वी पर वेद हैं उसी प्रकार अन्य लोक लोकान्तरों में भी वेद का प्रकाश है जिस प्रकार एक राजा के राज्य में एक से कानून होते हैं उसी प्रकार राजराजेश्वर की पूरी सृष्टि में एक से ही नियम हैं। जिस प्रकार माता-पिता का सम्मान करना, दुष्टों, चोरों को दंडित करने के नियम हैं और सज्जनों की रक्षा करना, उनका सम्मान करना है, उसी प्रकार अन्य लोक लोकान्तर में भी इसी प्रकार के वेदोक्त नियम समान रूप से हैं। उसमें कोई भेद नहीं है।

महर्षि का दावा यह है कि जैसे जीव सांसारिक सुख शरीर के आधार से भोगता है, वैसे परमेश्वर के आधार मुक्ति के आनन्द को भी भोगता है। यह मुक्त जीव अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता अन्य मुक्तों के साथ मिलता, सृष्टि विद्या को क्रम से देखता हुआ सब पदार्थों जो कि उसके ज्ञान के आगे हैं देखता है जितना ज्ञान अधिक होता है उसको उतना ही आनन्द अधिक होता है। भगवान कृष्ण ने भी गीता में जीवात्मा के लक्षण बताते हुए कहा हैः-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥ - गीता २/२३

अर्थात् इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते इसको आग जला नहीं सकती। इसको जल गला नहीं सकता। इससे यही सिद्ध होता है कि यह जीवात्मा धधकते हुए सूर्य में भी प्रवेश कर सकता है। उसकी गर्मी उसे जला नहीं सकती। जिस ग्रह में जल ही जल हो वह इस जीवात्मा को गीला नहीं कर सकता और जिस ग्रह में हवा तेज चल रही हो वह इसे सुखा नहीं सकता। इससे यही सिद्ध होता है कि ये जीवात्मा इस विशाल असीम अन्तरिक्ष में कहीं पर भी जा सकता है और उसका ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस मानव देह में अगर मुक्ति या मोक्ष चाहता है तो उसे पूर्ण वैराग्य का जीवन जीते हुए कपटपूर्ण व्यवहार का त्याग करते हुए निर्मल और पूर्ण ज्ञानी होने पर वह ब्रह्मानन्द को प्राप्त कर सकता है। महर्षि ने ब्रह्माण्ड का ज्ञान प्राप्त करने की यह विधि बतायी है इस शरीर के माध्यम से हम केवल जहाँ तक हमारी नजर जाती है और वैज्ञानिक साधनों की सीमा तक ही इस सृष्टि का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

महर्षि ने यह भी बताया कि लोकान्तरों की भाषा संस्कृत ही है। अगर आज के वैज्ञानिक संस्कृत भाषा में अन्य ग्रहों से सम्पर्क साधेंगे तो उनको संदेश प्राप्त हो सकते हैं। इसका प्रयोग करना चाहिए। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम व नवम समुल्लास में अन्तरिक्ष संबंधी कई जानकारियाँ दी हैं। यह कहा जाता है कि लंका का राजा रावण मंगल ग्रह तक जाता था। आज का वैज्ञानिक मंगल ग्रह और अन्य दूरस्थ ग्रहों तक की जानकारियाँ प्राप्त कर रहा है और वहाँ जाने के प्रयास में लगा है। चाँद पर मानव पहुँच चुका है। महर्षि ने जो विधि बतायी है क्या हम उस जीवनशैली में जी सकते हैं।

- सुखदेव व्यास
१८ जहाज गली, उज्जैन, मध्यप्रदेश
चलभाष- ०९०३९९१८२४८९

प्रेरणा

देने में सुख

केरल में थ्रिशूर शहर से सटा हुआ एक गाँव है जिसका नाम है परबपुर। १९५० में यहाँ के निवासी सी.ओ. थॉमस के यहाँ एक बेटे का जन्म हुआ जिसका नाम कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली रखा गया। बच्चा होनहार था। सामान्य तौर पर पढ़ाई करते-करते कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली ने १९७० में सेन्ट थॉमस कॉलेज, थ्रिशूर से फिजिक्स में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाने वाली एक कम्पनी टेलीक्स में सुपरवाइजर की हैसियत से काम आरम्भ किया। परन्तु कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली एक साधारण सुपरवाइजर बनकर नहीं रहना चाहता था। यद्यपि बहुत मुश्किल था परन्तु १९७७ में कुल एक लाख की पूँजी व दो कर्मचारियों के बल पर उसने वॉल्टेज स्टेब्लाइजर बनाने वाले वी.गार्ड इण्डस्ट्रीज की शुरूआत कर दी। उस समय वोल्टेज स्टेब्लाइजर बनाने के क्षेत्र में नेल्को व केल्ट्रोन जैसी कम्पनियाँ प्रसिद्ध थीं। उनके मुकाबले कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली की कम्पनी की कोई औकात नहीं थी। परन्तु कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली ने वॉल्टेज स्टेब्लाइजर में ऑटो कट प्रणाली चालू की। उसकी मेहनत व लगन से आज यह भारत का वॉल्टेज स्टेब्लाइजर बनाने के क्षेत्र में सबसे बड़ा ब्राण्ड बन चुका है। उसके अलावा भी अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामान बनाने में ७-२० प्रतिशत हिस्सा भारतीय बाजार में है।

कहते हैं कि कोई पुरुषार्थ करे और ठान ले तो व्यक्ति आकाश को भी छू सकता है। कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली ने केरल में वाटर थीम पार्क बनाया जिसका नाम बीगालैण्ड रखा उसके बाद बैंगलोर में बड़े स्तर पर वण्डरला के नाम से एम्यूजमेन्ट पार्क बनाया तब कोच्चि वाले पार्क का नाम भी बदलकर वण्डरला रख दिया। इस आलेख में कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली की चर्चा हम केवल उनके व्यापारिक सफलताओं के कारण नहीं कर रहे वरन मानवीय दर्द को समझकर उन्होंने मानवीयता की वो मिसाल उपस्थित की जिसके कारण उन्हें अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया और हम भी इस आलेख में चर्चा कर रहे हैं। इससे पहले कि कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली के योगदान की चर्चा करें कड़ी जोड़ने के लिए फादर डेविस चिरामिल की चर्चा करना चाहेंगे। सिलसिला जून २००९ में शुरू हुआ जब कुछ लोगों ने फादर चिरामिल से सम्पर्क किया और बताया कि उनका एक मित्र जिसकी उम्र ४७ साल थी और नाम गोपीनाथन था वह गुर्दा रोग से ग्रसित था और उसकी जान बचाने के लिए आवश्यक था कि उसके गुर्दा प्रत्यारोपित किए जाये। गोपीनाथ की पत्नी अनीता यद्यपि अपना गुर्दा देना चाहती थी परन्तु वह मैच नहीं हो पाया अतः ये लोग पैसा इकट्ठा कर रहे थे ताकि गुर्दा खरीदा जा सके। जब फादर डेविस ने पूछा कि डोनर कौन है तो इन्होंने बताया कि हम किसी एजेन्ट से बात कर रहे हैं उसने आश्वासन दिया है। तब फादर ने उनको कहा कि पहले

तो इस बात की क्या गारन्टी है कि वह पैसा लेकर भाग नहीं जायेगा और दूसरे गुर्दा खरीदना अवैधानिक भी है और इस कार्य में सहयोग देने का मतलब होगा कि मानव अंगों का व्यापार करने वाले लोगों की सहायता करना। तब फादर डेविस ने अचानक अप्रत्याशित प्रस्ताव रखा और स्वयं अपनी एक किडनी देने का फैसला किया। इस फैसले पर फादर के परिवार व इष्ट मित्रों ने अपनी असहमति जताई परन्तु अन्ततोगत्वा कोच्चि शहर के लेकश्योर हॉस्पीटल में ३० सितम्बर २००९ को यह प्रत्यारोपण सर्जरी हुई। अब फादर के दिमाग में आया कि ऐसे बहुत से रोगी होंगे जिनको गुर्दे की आवश्यकता होगी। इस सिलसिले में कुछ गंभीर करना चाहिए। उन्होंने किडनी फैडरेशन ऑफ इंडिया के नाम से एक ट्रस्ट बनाया। परन्तु इसके बाद सिलसिला ज्यादा चला नहीं। फादर कहते हैं कि मेरे पास ऐसे रोगियों के फोन जरूर आते थे जो अपने लिए डोनर चाहते थे। परन्तु डोनर के फोन नहीं आते थे। इधर कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली की एक रिश्तेदार महिला को भी किडनी की आवश्यकता हुई। पहले तो कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली के परिवार ने एजेन्ट्स के मार्फत यह कार्य करना चाहा पर बाद में कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली के मन में यह आया कि वह क्यों नहीं अपनी किडनी दे सकता पर इससे पहले यह कार्य सम्पन्न होता उस महिला की मृत्यु हो गई। इसका कोचाउसेफ

चिटिल्लापिल्ली को बहुत दु:ख हुआ। इस बीच में कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली ने फादर डेविस द्वारा किए गए सभी प्रयासों को गंभीरता से पढ़ा और जाना और दिसम्बर २०१० में उन्हें फोन किया। कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली ने जैसे ही बात शुरू की फादर डेविस में कहा कि आपको भी किडनी चाहिए। कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली ने अपना परिचय दिया और कहा

कि मैं किडनी डोनेट करना चाहता हूँ। यह पहला फोन था जो फादर डेविस को मिला जिसमें कि फोन करने वाले ने किडनी लेने की नहीं वरन् देने की इच्छा प्रकट की। फादर डेविस उस समय ४६ वर्ष के एक ट्रक ड्राइवर जॉय उल्लानन के लिए किडनी डोनर की तलाश में थे। यहाँ भी बात वही आयी थी कि जॉय की पत्नी किडनी देना चाहती थी परन्तु उसका ब्लड ग्रुप जॉय से मैच नहीं कर रहा था। फादर ने कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली ने पूछा कि क्या आपकी पत्नी शीला को इस पर कोई ऐतराज नहीं होगा कि एक बिल्कुल अनजान व्यक्ति के लिए आप अपनी किडनी दें। कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली ने अत्यन्त संक्षेप में मुस्कराते हुए यही कहा कि यह ऐतराज तो हर पत्नी करेगी। अन्ततोगत्वा २३ फरवरी २०११ को यह प्रत्यारोपण सम्पन्न हुआ। फादर के साथ कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली के जुड़ने से केएफआई को नये आयाम मिले। इन्होंने एक डोनर चैन प्रारम्भ की। जॉय उल्लानन की पत्नी जॉली अपने पति को तो किडनी नहीं दे सकती थी क्योंकि मैच नहीं हो रही थी तो इन्होंने उसको प्रेरित किया कि वह अपनी किडनी किसी ऐसे को डोनेट कर दे जिससे मैच हो जाए। उन्होंने उसे समझाया कि किसी अनजान व्यक्ति ने उसके पति को किडनी देकर उसकी जान बचाई है उसको भी ऐसा करना चाहिए। जॉली ने उसकी बात मान ली और एक लड़के अरुण राज को अपनी किडनी दे दी। इसी प्रेरणा के अन्तर्गत उस लड़के अरुण राज की माँ लीला ने अपना गुर्दा एक अजनबी मुरलीधरन को दे दिए। यह सिलसिला कुछ ऐसा ही हो गया जैसी कि एक फिल्म आई थी उसमें ऐसा ही कुछ दिखाया गया था जब कोई भलाई का कार्य किया जाता था और उपकृत व्यक्ति धन्यवाद देता था तो उसे सलाह दी जाती थी कि वह भी मुसीबत में पड़े तीन व्यक्तियों की सहायता कर दे। इन लोगों ने भी ऐसा ही करने का प्रयास किया था। एक अन्धा रोगी उन्नीकृष्णन था जिससे मानव अंगों के तस्करों ने दो लाख रु. ले लिए थे फिर भी उसका कार्य नहीं बना तो इन्होंने मुरलीधरन की पत्नी नीना को प्रेरणा देकर उन्नीकृष्णन का सफल ऑपरेशन करवाया।

मानवता की सेवा में इस प्रकार फादर डेविस एवं कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली सतत् संलग्न हैं। और वे ही तथा उन जैसे ही देने में जो सुख है, उसका अनुभव कर सकते हैं।

कई बार कुछ ऐसा होता है कि आपके कृत्य सर्व स्वीकृत नहीं होते। कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली के संदर्भ में भी कुछ ऐसा है जिसका संक्षिप्त उल्लेख यहाँ कर देना चाहेंगे।

केरल के तटीय इलाकों में आवारा कुत्तों का बड़ा आतंक फैला हुआ है। बताया जाता है कि केरल में दो सौ पचास हजार आवारा कुत्ते हैं। केवल एक जिले तिरूअनन्तपुरम् में ही पिछले साल गलियों में घूमने वाले इन कुत्तों ने पाँच हजार नौ सौ अढ़तालीस लोगों को बुरी तरह काट लिया जिनमें से कुछ की मौत भी हो गई। पुल्लूविला ग्राम में २०१६ में ही एक महिला के ऊपर आक्रमण करके उसे मार दिया। सुप्रीम कोर्ट में दाखिल एक रिपोर्ट में बताया गया है कि २०१५-१६ में ही एक सौ

हजार लोगों को इन कुत्तों के आक्रमण का सामना करना पड़ा। आये दिन ऐसी घटनाओं को देखकर कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली इन आवारा कुत्तों के खिलाफ खड़े हो गए। और केरल सरकार द्वारा कुत्तों को मारने का निषेध करने वाले कानून का भी ये विरोध करते हैं। कुत्तों के इस आतंक के कारण ही एक अन्तर्राष्ट्रीय केम्पेन चलाया जा रहा है जिसका नाम है 'बॉयकॉट केरल टूरिज्म।' विरोधस्वरूप कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली ने ऐसे कुछ कुत्तों को ले जाकर पुलिस स्टेशन के सामने बाँध दिया। पुलिस ने इनको गिरफ्तार भी किया।

केन्द्रीय मंत्री मेनका गाँधी इन आवारा कुत्तों को मारने के पूर्णतया खिलाफ हैं। जबकि केरल के मंत्री के. टी.जलील ने २०१८ तक इस समस्या का समाधान निकालने का वायदा किया है। आवारा कुत्तों के खिलाफ कोचाउसेफ चिटिल्लापिल्ली की मुहिम के बारे में भले ही दो राय हो सकती हैं परन्तु गुर्दा दान एवं अन्य समाज हित के कार्यों के लिए उनका व्यक्तित्व व आचरण नि:संदेह प्रेरणा का विषय है।

इनका जीवन प्रेरणा देता है कि आप कितने भी समृद्ध हो जायें परन्तु उस समृद्धि से ज्यादा सुख तब मिलता है जब आप किसी दूसरे की मदद करते हैं।

- अशोक आर्य, नवलखा महल

आध्यात्मिक जीवन ही मानवता का लक्ष्य

प्रभु की सृष्टि में मानव का स्तर सबसे उच्च माना गया है। क्योंकि मनुष्य अपने बुद्धियोग से अक्षुण्ण सुख की प्राप्ति कर सकता है, इसकी सुख-प्राप्ति के निमित्त ही सम्पूर्ण जगत् है। वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास आदि भी मानव लक्ष्य का अनेक प्रकार से प्रतिपादन करते हुए उत्सर्ग एवं अपवादरूप वाक्यों द्वारा निरतिशय सुख की ओर इसे ले जाते हैं। अतएव यदि मानव अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर नहीं होता तो वह मानव कहलाने का अधिकारी नहीं।

पाणिनीय व्याकरण में 'तस्यापत्यम्' इस सूत्र से मनु महर्षि के अपत्य को 'मानव' कहा गया है **'मनोरपत्य पुमान् मानवः'**। इसके साथ ही **'मनोर्जातावञ्यतौषुक् च'** इस सूत्र के अनुसार मनु शब्द से जाति-अर्थ में अञ् और यत् प्रत्यय के साथ षुक् का आगम करके शब्द जातिवाचक 'मानुष' सिद्ध किया गया है। 'मानव का भाव अथवा कर्म' इस अर्थ में 'तल्' प्रत्यय जोड़कर 'मानवता' की निष्पत्ति हुई है। अर्थात् मनु महर्षि के विधान के अनुसार अपनी शारीरिक, मानसिक और वाचिक हलचलों को तथा प्राणि-पाद द्वारा होने वाले कर्मों को नियन्त्रित करने वाले का नाम 'मानव' है। इसीलिये मानवता के विरुद्ध भाव रखने वाला 'माणव' कहा गया है। अर्थात् वह मानव कहलाने का अधिकारी नहीं।

अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोर्रोत्सर्गिकः स्मृतः।
नकारस्य च मूर्धन्यस्तेन सिद्धयति माणवः॥

अर्थात् 'मनु' शब्द से औत्सर्गिक 'अण' और नकार को 'णत्व' होकर कुत्सिक अपत्य और मूढ अर्थ में 'माणव' शब्द का प्रयोग होता है। इससे यह स्पष्ट है कि मानव शब्द का प्रयोग शास्त्रीय मार्ग से व्यवहार करने वाले व्यक्ति के लिये ही है और शास्त्रीय क्रियायें ही मानवता कही जायेंगी।

इसी प्रकार आध्यात्मिक शब्द भी

आत्मनि इत्यध्यात्मम्, अध्यात्मभवमाध्यात्मिकम्।

अर्थात् आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला जीवन- आध्यात्मिक दुःख की निवृत्तिपूर्वक आध्यात्मिक सुख प्राप्ति ही मानवता का लक्ष्य होना चाहिये।

आध्यात्मिक उपेक्षा

आजका मानव बौद्धिक तत्वों को प्रधानता देता हुआ बुद्धि बल पर जीवित रह उसी के द्वारा सर्वेष्ट साधन का अभिमान करता है। उसका कहना है कि बुद्धि द्वारा बुद्धिमानों ने देश काल और पात्रों की परिस्थिति के अनुसार स्मृति आदि का निर्माण किया और इनके द्वारा कुछ वर्गों का संचालन और संचालित वर्गों के हानि लाभ का प्रदर्शन दृष्टान्त और आख्यानों द्वारा किया, जिसे प्रमुखतः 'ब्राह्मण सभ्यता' के नाम से कहा जा सकता है। बुद्धि का विकास जैसे-जैसे होता है, मानव वैसे-वैसे ही अपने सुख-साधनों का अन्वेषण और

उनका उपभोग करके कृतकृत्यता का अनुभव करता है। बौद्धवाद ही भौतिकवाद की जड़ है। मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुसार बुद्धि को ऐसे क्षेत्रों में दौरा करना पड़ता है कि वह अपनी आवश्यकता का परिहार सोच लेता है और उससे नितान्त संतोष एवं आनन्द का अनुभव करता है। जैसे-जैसे जड़वाद की उन्नति होती जाती है, वैसे-वैसे आध्यात्मिकता से बहिर्मुखता भी होती चली जाती है; क्योंकि मनुष्य बाह्य वस्तुओं को ही सुख साधन मान लेता है। उसके ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय और मन बाहर की ओर ही दौड़ लगाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वह नयी-नयी आवश्यकताओं के अन्वेषण में इतना विकल और व्यस्त हो जाता है कि उसके अतिरिक्त अन्य भी कोई वस्तु है, इसका उसे अनुभव ही नहीं हो पाता। अन्त में वह जड़वादी स्वार्जित और स्वनिर्मित पदार्थों के उपभोग की क्षमता से क्षीण होकर व्यथित और किंकर्तव्य-विमूढ हो जाता है तथा अपनी आत्मबहिर्मुखता पर पश्चाताप करता है।

आध्यात्मिक दुःख

संसार में आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तीन दुःख प्रसिद्ध हैं। आधिभौतिक दुःख मानुष-पशु-मृग-पक्षि,

सरीसृप-स्थावर आदि के द्वारा प्राप्त होता है। इनकी निवृत्ति बाह्य उपायों से होती है। आधिदैविक दुःख प्राकृतिक आपदा हैं। आध्यात्मिक दुःख दो प्रकार का है- शारीरिक और मानसिक। शारीरिक दुःख वात-पित्त और श्लेष्मा की विषमता से अनेक प्रकार के होते हैं तथा मानसिक दुःख काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, ईर्ष्यादि, विशेष, विषय-निबन्ध अतएव विविध होते हैं। ये दुःख आन्तरोपाप साध्य हैं।

धीधैर्यमात्मविज्ञानं मनोदोषौषधं परम्।

इस आयुर्वेद के सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि, धैर्य एवं आत्मविज्ञान मन के दोषों को शान्त करने की परम औषध हैं।

आध्यात्मिक दुःख की शाखा

शारीरिक दुःख वात, पित्त और कफ की विषमता के कारण अनेक प्रकार से शरीर को अभिव्याप्त करते हैं। वातज दोष शरीर को स्तब्ध कर संचालन क्रिया का अवरोध करके उसे पङ्गु और चेष्टाहीन बना देते हैं। इसी प्रकार पित्त-प्रकोपजन्य

रोग भी रक्तचाप, व्रण-विस्फोटादि अनेक प्रकार के होते हैं। कफ रोग कास-श्वासादि द्वारा मानव देह का सदैव विघटन करते और उसे दुर्बल बनाते रहते हैं। मानसिक दुःखों के विषय में तो कहना ही क्या है, एक-एक मानसिक दोष साक्षात् नरक का द्वार बन बैठता है। काम को ही लीजिए-यद्यपि **'धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ'** इत्यादि वाक्यों के अनुसार धर्म से अविरुद्ध काम भगवान का स्वरूप है, तथापि मन का कुछ और ही संकल्प रहता है और वह इस भावना को **'कामातुराणां न भयं न लज्जा'** तक पहुँचा देता है। इसी प्रकार

क्रोधान्धस्य विवेक शून्यमनसः किं किं न क्रियते कटु।
लोभः प्रसूतिः पापस्य लोभः पापस्य कारणम्।।

इत्यादि अनेक प्रमाणों से मानसिक दुःख अनेक अनर्थों का मूल है। मानसिक दुःखों की निवृत्ति के लिए प्रयत्न करना ही मानवता का मुख्य लक्ष्य है।

मानव की महत्ता

आस्तिक और नास्तिक सभी इस बात को मानते हैं कि मानव शरीर सर्वोत्कृष्ट है। यह जंक्शन स्टेशन है।

भगवान् ने जड़सृष्टि वृक्षादि तथा चेतन-सृष्टि पशु, मृग आदि को रचकर पुनः मनुष्य को बनाकर अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना को प्रस्तुत किया। कारण यह कि परब्रह्म परमात्मा के साक्षात्कार अथवा यों कहिए कि आत्मदर्शन की क्षमता मनुष्य में ही है। अतएव महर्षि पराशर ने मानव-प्रशंसा करते हुए कहा है-

चित्तप्रसादबलरूपतपांसि मेधा
मायुष्यशौचसुभगत्वमरोगता च।
ओजस्वितां त्विषमदात् पुरुषस्य चीर्णं
स्नानं यशोविभवसौख्यमलोलुपत्वम्।।

'चित्तप्रसाद, बल, रूप, तप, बुद्धि, आयुष्य, शौच, सौन्दर्य, स्वास्थ्य, ओज, कान्ति, स्नान, यश, वैभव, सुख और अलोभ मानव के लिये स्वयं भगवान की देन हैं।' मानव की विशेषता के एक-एक अंश से अन्य वस्तु विशिष्ट मानी गयी है। जहाँ सभी विशेषताओं का सामानाधिकरण्य है, वह मानव भगवान् की कितनी बहुमूल्य निधि है।

मानव का लक्ष्य

ब्रह्म के अवलोकन की क्षमता मानव में है, यह कहा गया है। परब्रह्म के साक्षात्कार का अर्थ है-स्वात्मदर्शन। इस आत्मदर्शन के साधन अनेक शास्त्रकारों ने बताये हैं। उनमें व्याप्य-व्यापक रूप से अनेक साधनों तथा उपायों का वर्णन है। वर्णधर्म एवं आश्रमधर्म इसकी प्रधान भित्तियाँ हैं। जहाँ वर्णधर्म और आश्रमधर्म नहीं हैं, वहाँ आत्मसाक्षात्काररूप मानव लक्ष्य की पूर्ति की सम्भावना ही नहीं की जा सकती है। जिन-जिन वस्तुओं के सेवन का निषेध शास्त्रकारों ने लिखा है, उसको उसी प्रकार मानना तथा आचरण करना कल्याण का हेतु और लक्ष्य का साधक है। इसके साथ-साथ जो सार्वभौम धर्म हैं, उनका भी आचरण करना अनिवार्य है।

'सार्वभौम धर्म'-

सत्यमस्तेयमक्रोधो ह्रीः शौचं धीर्धृतिर्दमः।
संयतेन्द्रियता विद्या धर्मः सार्व उदाहृतः।।

'सत्य, चोरी न करना, अक्रोध, लज्जा, पवित्रता, बुद्धि, मनःसंयम, इन्द्रियसंमय, विद्या आदि सार्वभौम धर्म हैं।' इन धर्मों के पालन किये बिना मानव लक्ष्यसिद्धि पर नहीं पहुँच सकता। जिन देशों में तथा जिन वर्गों में वर्णाश्रम-व्यवस्था नहीं है, वहाँ आध्यात्मिक सुख स्वप्न में भी प्राप्त नहीं हो सकता, यह ध्रुव सत्य है।

कुछ लोग समय के साथ-साथ मानव व्यवस्थापक धर्म शास्त्रों के परिवर्तन की बात कहते हैं, यह उचित प्रतीत नहीं होता; क्योंकि शास्त्रों का सिद्धान्त सार्वभौम और अपरिवर्तनीय है, यह बात अनेक बार सिद्धान्त-सिद्ध हो चुकी है। मनुष्य अपनी दुर्बलता का आच्छादन इस प्रकार से करने की चेष्टा करता है, जो सर्वथा व्यवहारायोग्य है। अतएव धर्मपूर्वक व्यवहार करने से गृहस्थ भी मुक्त होने का अधिकारी बन जाता है-

न्यायागतधनस्तत्वज्ञाननिष्ठोऽतिथिप्रियः ।
श्राद्धंकृत् सत्यवादी च गृहस्थोऽपि हि मुच्यते।।

अर्थात् न्यायपूर्वक धनार्जन करने वाला, तत्व-ज्ञान में निष्ठा रखनेवाला, सत्यभाषी, अतिथिसेवी और जीवित-पितरों की श्रद्धापूर्वक सेवा करनेवाला गृहस्थ भी मुक्त हो जाता है। यही आध्यात्मिक जीवन है और इसी की प्राप्ति के लिए यत्न करने

में 'मानवता' की सार्थकता है।

छीना-झपटी

आज भौतिकवाद से आक्रान्त मनुष्य का दृष्टिकोण धर्म और ईश्वर से हटकर अनाधिकार चेष्टाओं में अनवरत रत देखा जा रहा है। वर्ण और आश्रम की मर्यादाओं को तोड़ने के लिये आन्दोलन चल रहे हैं। जब मानव अपने देश, अपनी जाति, अपने धर्मग्रन्थों पर अविश्वास करके अन्य देश, जाति और धर्म की बात करता है, तब इसका सीधा अर्थ है कि वह कहीं भी सफल नहीं हो सकता। इसीलिये गीता में भगवान् ने कहा है-

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।

अपना धर्म ही सब कुछ है। उसमें किसी प्रकार का कष्ट भोगते हुए भी परधर्म की अपेक्षा सौष्ठव है। इसीलिये भारतीय इतिहास के समुज्ज्वल रत्न अपनी मर्यादाओं की रक्षा के लिये बलि वेदी पर चढ़े, उन्होंने प्राण तक दिये और अपना सब कुछ खोकर भी मर्यादाओं की रक्षा की। प्रवाह में बहना मुर्दों का काम है। साहसी और जिन्दा दिल प्रवाह के प्रबल पात से अपने को सुरक्षित करते हुए मानवता का संरक्षण करते हैं तथा सदैव अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहते हैं।

उपसंहार

मानव-जीवन की सार्थकता और कृत्यकृत्यता आध्यात्मिक

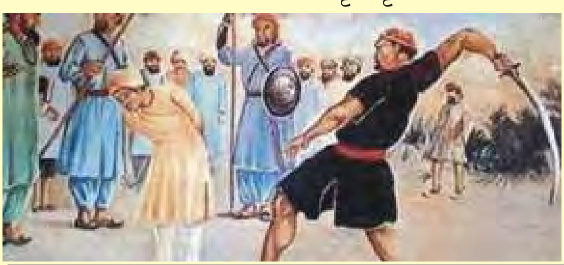

सुख-शान्ति में है। उसके लिये सदैव जागरूक रहना चाहिये। चित्त का संशोधन अनेक उपायों से करना चाहिये। परदोष, परनिन्दा, परस्वापहरण की भावनाएँ जो आज मानव को दानव बना रही हैं, इनसे बचना चाहिये। असत्यभाषण का अवरोध, सत्य भाषण की चेष्टा सदैव करनी चाहिए; तभी मनुष्य अपने लक्ष्य की पूर्ति कर सकता है और मानव शरीर की सफलता प्राप्त कर सकता है। अन्यथा-

तस्यामृतं क्षरति हस्तगतं प्रमादात्।

के अनुसार मानव अमृत के आये हुए घट को अपने हाथ से गिराकर प्रमाद का परिचय देगा। अतः आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति के लिए सदैव प्रयत्न करना चाहिये।

लेखक- स्वामीजी श्रीकृष्णयोवाश्रमजी महाराज
साभार- कल्याण

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

बलिदान दिवस (६ अप्रैल)

महाशय राजपाल जी

An Arya who visited Lahore, the capital of undivided Punjab, invariably paid a visit to the Gurudutt Bhawan that housed the Arya Pratinidhi Sabha Punjab and dropped in Arya Pustakalaya-Saraswati Ashram for an intellectual cum religious get-together. On the fateful day, an illiterate Muslim named Ilamdin, made an unlawful entry into the resting place of Mahashay Rajpal and thrust a long dagger like rapacious knife into his chest. The deep wound cost him his life. The assailant was grabbed and held tight by Arya stalwarts present and handed over to the police. **The killer was tried in a sessions court and finally hanged till death.**

One may wonder today in the 21st century why was the murder of a noble man like Rajpal committed by an illiterate man. Well, the story is long but to cut it short one may say that the Muslim clergy could not face the Truth as told by the Arya Samaj men of letters who always backed their propositions by facts and figures that went unchallenged. Stung by the logical presentation of religious points of view wherein religions that did not stand the scrutiny of logic fell flat on the ground and stood in the danger of losing followers, looked for an avenue of violent revenge.

In Focus

Maharishi Swami Dayanand Saraswati had exposed in the 14th chapter of the Satyarth Prakash that Islam professed to be a religion of Peace on paper and its adherents were the most violent men on Earth. History stood by the said great treatise.

The Muslim community avenged the sting by writing a tract, 'Uneeswin Sadi ka Mahrishi', wherein they hurled abusive false charges against the founder of the Arya Samaj which went unproven. The Muslim community also made wild accusations against Yogeshwar Shri Krishna in a book of malicious charges named, "Krishna, Teri Gita Jalani Padegi".

Indeed a counter attack on the sections of Muslims who pioneered the two pieces of contemptuous writings was called for. Pt Chamupati wrote a booklet "RANGEELA RASOOL" anonymously and Mahashay Rajpal boldly published it in 1923. The book sold well for a year and a half and remained unchallenged by the affected community.

All was quiet on the western front except battle of books. **It was Gandhiji who took note of Rangeela Rasool and called for action against the writer and publisher. [why Gandhi ji did't took note of 'Unneswi sadi ka Maharshi' and 'krishna teri Geeta jalani padegi-*ed.*']**A man of peace and non-violence set the Thames on fire. The situation became volatile and created a law and order problem in Lahore. The British Administration launched a case of prosecution against the publisher, Mahashay Rajpal to placate the Muslim community that was up in arms.

The case **Crown vs Rajpal** eventually became a case of Hindus vs Muslims. Eminent lawyers like Narang from the Hindu side and Jinnah from the Muslim side appeared, justice was done and Mahashay Rajpal was acquitted of charges under section 153A IPC with honour by the Punjab High Court.

Nevertheless, the Muslim community was not satisfied with logic and peace and took recourse to violence. Ilamdin represented that shame of violence. Mahashay Rajpal is hailed as a martyr, a man who sacrificed his life for the cause of the Vedic Dharma without revealing name of author of Rangeela Rasool as vowed. Mahashay Rajpal is hailed as a Martyr even after eight decades plus of his martyrdom.

- Brigadier chitranjan Sawant, vsm

रक्त अंकुरण सम्मान

– मधुकान्त

जीवन के ५० बसन्त बीत जाने के बाद एक दिन छोटी सी पुस्तक हाथ में आ गई। इस पुस्तक में रक्तदान के विषय में जानकारी दी गई थी जैसे रक्तदान क्या होता है? इसका महत्व? रक्तदान कैसे होता है? इसके करने से क्या लाभ हैं? आदि बातों के बारे में बताया गया था। पाँच दस मिनिट में सारी पुस्तक पढ़ ली और पढ़ने के बाद मन में एक विचार उत्पन्न हुआ कि जीवन में आज तक कभी रक्तदान नहीं किया। इतने श्रेष्ठ काम से हम आज तक वंचित रहे, क्यों? न कभी इस विषय में पढ़ा, न किसी को करते देखा, न कभी किसी ने रक्तदान करने के लिए प्रेरित किया। मन में एक प्रकार का पश्चाताप हुआ और निश्चय किया कि जैसे ही जहाँ भी संभव होगा, रक्तदान अवश्य करेंगे।

घर पहुँचने पर भी रक्तदान का विचार मन पर छाया रहा। परिवार में चर्चा हुई तो दोनों बेटे तथा पत्नी भी रक्तदान करने को तैयार हो गये। अपने साथियों से चर्चा हुई तो एक मित्र का विचार आया कि क्यों न सब मिलकर सांपला में रक्तदान शिविर लगा लें। सोच विचार करके सांपला में प्रथम रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें ५१ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ और सबने बहुत सफल आयोजन बताया। उपायुक्त महोदय ने विशेष प्रशंसा पत्र बनवाकर भिजवाया।

इस सफलता से उत्साहित होकर रक्तदान करना शौक बन गया। वर्ष २०१० से २०१३ में सांपला में कुछ रक्त दानियों की टीम तैयार हो गई और यह शौक जुनून में बदल गया। रक्तदान करने कराने के अतिरिक्त कोई बात अच्छी न लगती। गाँव गाँव में घूमकर रक्तदान शिविर लगाने लगे।

नियम के अनुसार ६० वर्ष का होने के बाद व्यक्ति को रक्तदान नहीं करना चाहिए परन्तु रक्तदान का नशा इतना बढ़ गया कि ६० वर्ष की आयु होने के बाद तीन वर्ष तक ५६ वर्ष लिखवाकर रक्तदान करता रहा। फिर सरकार ने भी रक्तदान करने की आयु बढ़ाकर ६५ वर्ष कर दी और मुझे झूठ बोलने से बचा लिया।

५० से ६५ वर्ष की आयु तक मैं केवल १८ बार रक्तदान कर पाया। मेरे कई साथी ५० से अधिक बार रक्तदान कर चुके थे। ये बात मुझे हमेशा टीसती रहती थी कि मुझे रक्तदान करने का काम इतनी विलम्ब से क्यों सूझा। काश मुझे १८ वर्ष के बाद ही किसी ने जोड़ दिया होता तो कमाल हो जाता। बार बार यह ख्याल मन में आता तो एक विचार उत्पन्न हुआ कि यदि प्रत्येक रोगी के लिए रक्त उपलब्ध कराना है तो १८ वर्ष पूरे होते ही बालक को रक्तदान से जोड़ना पड़ेगा और इसका संस्कार स्कूल में ही डालना पड़ेगा।

चिन्तन करते-करते योजना बन गई कि कार्यक्रम 'रक्तदान स्कूल की ओर' के अन्तर्गत रक्त अंकुरण सम्मान किया जाए ताकि विद्यार्थी १८ साल का होते ही रक्तदान के लिए अपना हाथ फैला दे। सभी साहित्यिक मित्रों ने विचार किया कि रक्तदान की प्रेरणा देने के लिए कुछ मौलिक साहित्य का सृजन किया जाए जैसे कविताएँ, लघु कथाएँ, कहानियाँ, नाटक संस्मरण अनुभव आदि। ये सब तैयार करके स्कूल की हिन्दी व सामाजिक ज्ञान की नौवीं कक्षा से १२ वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों में लगवा दिया जाए ताकि छात्र विद्यालय काल में ही रक्तदान के लिए प्रेरित हो जाए। इसके लिए एन.सी.ई.आर.टी. से संपर्क भी किया गया परन्तु अभी तक संभव नहीं हो पाया है। हमारा प्रयास जारी है देर सवेर सफलता मिल ही जायेगी।

हमने अपने ही संसाधनों द्वारा रक्तदान स्कूल की ओर कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए 'रक्त अंकुरण सम्मान' चलाने का निश्चय किया।

'रक्तदान अंकुरण सम्मान' बड़े स्तर पर किया जाता था इसलिए यह भी आवश्यक था कि इसमें कम से कम धन कम से कम समय और कम से कम श्रम लगना चाहिए। ऐसी ही योजना बनाई गई। रक्त अंकुरण सम्मान में हमने उन बच्चों को सम्मानित करना था जिन बच्चों के माता पिता या बहन भाई ने कभी भी रक्तदान किया हो। अभिभावक के रक्तदान करने पर उसके बच्चे को सम्मानित करना था। हम स्कूल के

प्राचार्य को सूचना भेज देते। स्कूल का मुखिया कक्षा अध्यापक के माध्यम से उन छात्रों की लिस्ट तैयार करा लेते जिनके अभिभावकों ने रक्तदान किया हो। स्कूल मुखिया हमें छात्रों की संख्या बता देते और हममें से कोई भी दो कार्यकर्ता जाकर प्रार्थना सभा में सभी छात्रों को रक्तदान के विषय में बताते और उन छात्रों को गोल्ड मैडल पहनाकर सम्मानित कर देते। गोल्ड मैडल १०-१२ रुपये में तैयार हो जाता था। इस 'रक्त अंकुरण सम्मान' में न अधिक समय लगता और न ही धन और श्रम। इससे रक्तदान के प्रति गजब की जागरूकता आई। बच्चों को सम्मानित कराने के लिए अभिभावक रक्तदान करने लगे। जिन स्कूलों में सभी छात्र १८ साल से कम आयु के थे उनमें रक्तदान शिविर लगने लगे। उनके छात्र इतने प्रेरित हो जाते कि रक्तदान करने के लिए वे अठारह वर्ष का होने की प्रतीक्षा करने लगते।

एक प्रकार से यह रक्त बीजने का काम हो गया। धीरे-धीरे रक्त बीज अंकुरित होने लगे और रक्तदान शिविर आयोजित करने वाले समाज सेवी इस सफलता को देखकर बहुत खुश हुए। अब विश्वास होने लगा कि जब यह फसल तैयार होगी तो इतना रक्त एकत्रित हो जायेगा कि रोगी रक्त की नहीं, रक्त रोगी की प्रतीक्षा करेगा।

- २११, एल, मॉडल टाऊन
रोहतक (हरियाणा)
चलभाष- ९८९६६६७७१४

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - 313001
अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

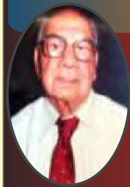

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली

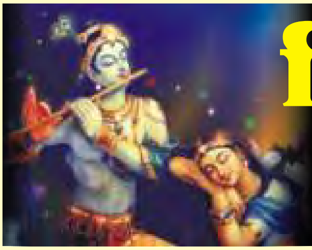

निष्कलंक कर गया

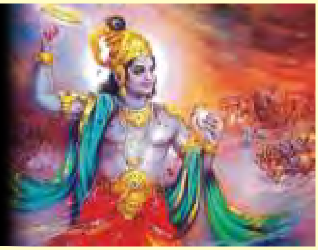

महर्षि दयानन्द जहाँ स्वयं निष्कलंक जीवन बिता गये, वहाँ उन्होंने पूर्वज ऋषि, मुनियों पर लगे हुए कई कलंक धोकर उनके उज्ज्वल स्वरूप संसार के सामने रखे।

१. भगवान् कृष्ण पर जितने कलंक उनके भक्तों की तरफ से लगाये जाते हैं और श्रीमद् भागवत् पुराण में उनके जीवन को जिस घिनावने तरीके से कलंकित किया गया है, इसका उदाहरण संसार भर में नहीं मिलता। ईसाई और मुसलमान प्रचारक भगवान् कृष्ण पर चीरहरण, राधा-रमण, गोपी वल्लभादि लगे आरोपों को लेकर हिन्दुओं में अपने पूर्वजों के जीवनों के प्रति घृणा उत्पन्न कर अपना उल्लू सीधा कर रहे थे और हजारों लाखों हिन्दू भगवान् कृष्ण पर लगाए इन कलंकों को ठीक समझते हुए ईसाई और मुसलमान बनते जा रहे थे। परन्तु महर्षि जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि 'कृष्ण जी का जीवन चरित्र महाभारत में आप्त पुरुषों जैसा लिखा है कि उन्होंने जन्म से मरण पर्यन्त कोई अधर्म का काम नहीं किया।'

२. पुराणों में एक कथा आती है कि प्रजापति अपनी लड़की के पीछे भागा और उसको गर्भवती कर दिया। इससे कितना भयानक कलंक हमारी सभ्यता पर आता है परन्तु महर्षि जी ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में इसका निराकरण अत्यन्त उत्तम रीति से करके हमारी प्राचीन सभ्यता पर लगे इस कलंक को बिल्कुल साफ कर दिया। महर्षि लिखते हैं-

'प्रजापति कहते हैं सूर्य को और उसकी दो कन्याएँ हैं। एक प्रकाश और दूसरी ऊषा, क्योंकि जो जिससे उत्पन्न होता है,

वही उसकी सन्तान कहलाता है। इसलिए ऊषा जो कि तीन चार घड़ी रात्रि शेष रहने पर पूर्व दिशा में लाली दिखाई देती है वह सूर्य की किरण से उत्पन्न होने से इसकी कन्या कहलाती है। उन में ऊषा के सम्मुख जो प्रथम सूर्य की किरण जाकर पड़ती है वही वीर्य-स्थापना के समान है उन दोनों के समागम से दिवस रूपी पुत्र उत्पन्न होता है।

३. पुराणों की इस कलंकित कथा को अलंकार रूप में निरुक्त में इस प्रकार खोला गया है।

पिता के समान जल रूप मेघ है। इसकी पृथ्वी रूप दुहिता अर्थात् कन्या है क्योंकि पृथ्वी की उत्पत्ति जल से होती है। अब जल रूप मेघ वृष्टि द्वारा जल रूप वीर्य को धारण करता है, तब इस पृथ्वी में गर्भ रहकर औषधि वनस्पति आदि अनेक अन्न, पुष्प, फल आदि उत्पन्न होते हैं। इस कलंक को कैसी वैज्ञानिक खोजकर महर्षि ने प्रजापति को निष्कलंक किया है।

४. एक और कलंक इन्द्र अहिल्या की कथा में लगाया गया। देवों का राजा इन्द्र देवलोक में देहधारी देव था। वह गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या के साथ जार कर्म किया करता था। एक दिन जब उन दोनों को गौतम ने देख लिया, तब इस प्रकार शाप दिया। हे इन्द्र तू हजार भग वाला हो जा और अहिल्या को शाप दिया कि तू पत्थर हो जा। परन्तु जब उन्होंने गौतम से प्रार्थना की कि हमारे शाप का मोक्ष कैसे होगा, तब इन्द्र को कहा- कि तुम्हारे हजार भग की जगह हजार नेत्र हो जावें, और अहिल्या को वचन दिया कि जिस समय रामचन्द्र जी अवतार लेकर तेरे पर अपना चरण रखेंगे उस समय तू फिर अपने स्वरूप में आ जावेगी, इस प्रकार पुराणों में यह कथा बिगाड़ कर लिखी है। सत्य ग्रन्थों में ऐसा नहीं लिखा है। अपितु इस प्रकार लिखा है- सूर्य का नाम इन्द्र है, रात्रि का नाम अहिल्या तथा चन्द्रमा गौतम है। यहाँ रात्रि और चन्द्रमा स्त्री पुरुष के समान रूपक अलंकार है। (वैसे आजकल भी आम तौर पर पूर्णमासी की रात को सुहागन रात कहते हैं।) चन्द्रमा अपनी स्त्री रात्रि से सब प्राणियों को आनन्दित करता है और रात्रि का जार आदित्य अर्थात् सूर्य है। जिसके उदय होने से रात्रि के वर्तमान रूप श्रृंगार को बिगाड़ने वाला है यानि तारा गण जिससे रात्रि की शोभा होती है सूर्योदय पर सब छिप जाते हैं। इसलिये यह स्त्री पुरुष का अलंकार बाँधा है कि यह अत्यन्त वेग से चलता है और रात्रि को अहिल्या इसलिये कहते हैं कि इसमें दिन लय हो जाता है। अर्थात् सूर्य रात्रि को निवृत कर देता है इसलिए वह

उसका जार कहाता है। इस उत्तम रूपक अलंकार को अल्प बुद्धि पुरुषों ने बिगाड़ कर पूर्वजों पर कितने कलंक लगाए।

जिससे ईसाई मुसलमान प्रचारक फायदा उठा कर लाखों करोड़ों हिन्दुओं को ईसाई बनाने में सफल हुए और रामचन्द्र के अहिल्या रूपी पत्थर पर पाँव रखने से उसका उड़ जाना, इस रूपक का स्पष्ट रूप से समर्थन करता है। क्योंकि जब रामचन्द्र जी अयोध्या से निकल कर नदी पार करने को नदी पर पहुँचे तो उस समय दिन निकल आया था और रात्रि उड़ गई थी। अर्थात् नदी किनारे रामचन्द्र के पाँव पड़ने से रात्रि समाप्त हो गई। यानि 'अहिल्या उड़ गई' किसी कवि ने इसको इस तरह बाँधा है।

मशरक से निकला ज्योंहि शाहे खावर।
परी रात की उड़ गई पर लगा कर॥

इस तरह महर्षि खुद भी निष्कलंक थे और अपने सब पूर्वजों को भी निष्कलंक कर गये। जितनी भी पुराणों में ऊटपटांग कथाएँ आती हैं। जिनसे हमारे किसी भी ऋषि, मुनि, महात्मा पर कोई कलंक का आरोप होता है। इन सब को महर्षि जी ने अलंकारिक कथाएँ सिद्ध कर के सब कलंक एक ही असूल बना कर एकदम धो डाले हैं।

५. पं. नीलकण्ठ शास्त्री जो ईसाईयों के प्रश्नों का उत्तर न दे सकने के कारण ईसाई हो गए और उन्होंने इंजील का संस्कृत में भाष्य भी किया। महर्षि को मिले और उनके व्याख्यान सुन कर एक दिन महर्षि जी से बोले कि अगर आप जैसा गुरु हम को पहले मिल जाता तो हम कदाचित् ईसाई न होते। महर्षि जी ने कहा कि- अब भी क्या बिगड़ा है, वापस आ जाओ। तब नीलकण्ठ कहने लगा कि 'महाराज अब तो पानी सिर से गुजर चुका है। लड़के लड़कियाँ सब ईसाई के घर विवाहे गये हैं और ईसाईयों की तरफ से सब को काफी तनख्वाहें मिल रही हैं। अब वापस आना मुश्किल है।'

- पूर्ण पुरुष का विचित्र जीवन चरित्र

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (पञ्चम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ सं		सा १		म १	■	२	स्ते	२	■
■	३		क ३	■	४	व	■	५	हीं
६	स	६	व ६	■	७	ष		७	क्त ७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जैसे शरीर में शिर की आवश्यकता है वैसे आश्रमों में किस आश्रम की आवश्यकता है?
२. चोरी का त्याग क्या कहाता है?
३. मनु महर्षि के अनुसार संन्यासियों को किस प्रकार के कर्म अवश्य करने चाहिए?
४. शरीर से किए जाने वाले कर्मों के फल का भोक्ता कौन है?
५. क्या परोपकारी संन्यासियों को धन रखने में दोष है?
६. क्या श्राद्ध की सामग्री मरे पितरों को पहुँचाना सम्भव है?
७. जो व्यक्ति विषय के दोष और वीर्य संरक्षण के गुण जानता है वह कभी क्या नहीं होता?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०२/१७ का सही उत्तर

१. अनुक्रम	२. सफेद	३. आहार
४. अरण्य	५. हाँ	६. वेदान्त
७. मुक्ति	८. शुद्ध	

"विस्तृत नियम पृष्ठ १९ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मई २०१७

बाबा होने का सुख

व्यंग्य

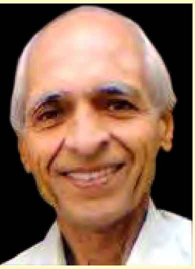

प्रो. शाम लाल कौशल

भारत सन्तों, महन्तों, बाबाओं, आचार्यों तथा गुरुओं का देश रहा है। गुरु वशिष्ठ, वाल्मीकि, वेद व्यास, शंकराचार्य, सन्त रविदास, सन्त तुकाराम, गुरु गोरखनाथ आदि का नाम आते ही सिर श्रद्धा तथा सम्मान के साथ झुक जाता है। ये लोग ज्ञानी, सर्वहितकारी, विद्वान्, ईमानदार, तेजस्वी, ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले, सच्चरित्र, ईश्वर की सत्ता को जानने तथा मानने वाले, सत्यवक्ता तथा दुनियादारी से दूर हुआ करते थे तभी तो राजा महाराजा लोग इनके लिए अपना राजसिंहासन भी छोड़ने के लिए तैयार हो जाते थे। हमारे देश में सन्तों, महन्तों की पूजा तथा सम्मान करने की प्रवृत्ति आज भी बरकरार है। बेशक हर साल रामलीला व प्रदर्शनों द्वारा रावण पाखण्डी साधु का वेश धारण कर वनवासी सीता हरण के द्वारा इन पर अन्धविश्वास ना करने की भी चेतावनी दी जाती है।

लोग चाहे कुछ भी कहें लेकिन बाबा या धार्मिक गुरु होने का कुछ अपना ही सुख या लुत्फ है। आजकल आम आदमी के लिए घर गृहस्थी चलाना एक टेढ़ी खीर साबित हो रही है। जिस तरह प्याज, टमाटर, दालें, घी, सब्जियाँ महँगी हो रही हैं, जिस तरह बिजली के दाम, इलाज कराना, शिक्षा, यातायात महँगे हो रहे हैं, हर दिन नये-नये टैक्स लग रहे हैं या फिर बढ़ रहे हैं, आम आदमी के लिए घर की गाड़ी चलाना धरती को धकेलने के बराबर हो रहा है। जब कोई व्यक्ति बाबा बन जाता है तो वह इन पंगों से तो बच ही जाता है बल्कि पत्नी की दिन रात की चक चक बच्चों की बदतमीजी तथा रिश्तेदारों की तिरछी नजर से निजात पा लेता है। उसे घर की कोई चिन्ता फिक्र नहीं होती, चैन से गद्देदार बिस्तर पर अपनी कुटिया में सोता है।

कोई आदमी सारी उम्र चाहे कितना भी दान पुण्य कर ले, धार्मिक ग्रन्थ पढ़ ले या फिर और कोई काम कर ले उसकी इतनी प्रसिद्धि तथा नाम नहीं हो सकता जितना कि बाबा बनके। वह शोहरत की नई बुलन्दियों को छू लेता है। आजकल आस्था, संस्कार, साधना आदि टीवी चैनलों पर बाबाओं, गुरुओं आदि के प्रवचन/भजन रात दिन प्रसारित होते रहते हैं। ये बाबा लोग जहाँ भी प्रवचन के लिए जाते हैं इनके श्रद्धालु इन्हें लाखों रुपये भेंटस्वरूप देते हैं। इनके पहुँचने पर इन्हें फूलों मालाओं से लाद देते हैं, बड़े बड़े उच्च पदों के अधिकारी, व्यवसायी तथा राजनेता इनका स्वागत करके अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं। इनके द्वारा किए गए प्रवचन सारी दुनिया में 'लाईव' दिखाये जाते हैं। जब लोगों की भीड़ दुःखों, समस्याओं तथा परेशानियों के मद्देनजर बाबा जी के पाँव पड़ते हैं तथा उन्हें इनसे निजात पाने के लिए आशीर्वाद देने के लिए गिड़गिड़ाते हैं, नाक रगड़ते हैं तथा चढ़ावे चढ़ाते हैं, तब बाबा अपने आपको परमात्मा समझने की मूर्खता कर ही बैठते हैं। किसी को नौकरी चाहिए, कोई सन्तान चाहता है, कोई धन दौलत तथा कोई चुनाव जीतकर मंत्री बनना चाहता है। हमारे देश में बाबाओं तथा राजनेताओं की सांठ गांठ कोई नई बात नहीं। हमारे यहाँ चन्द्रास्वामी, धीरेन्द्र ब्रह्मचारी आदि सत्ता के नजदीक रहे हैं। चुनावों के समय राजनेता बाबाओं से आशीर्वाद लेने जाते देखे जा सकते हैं।

बाबा चाहे वस्त्र काले, सफेद या भगवे रंग के पहने। बाबा चाहे जटाधारी हो, जमीन को छूने वाली दाढ़ी रखे, कान पड़वा कर रखे, तिलकधारी हो या फिर रुद्राक्ष की माला

पहनने वाला हो, अपने अनुयायियों तथा श्रद्धालुओं में इज्जत पाना इनका उद्देश्य होता है। इन बाबा लोगों के पास करोड़ों/अरबों रुपये की चल/अचल सम्पत्ति होती है। जहाँ जहाँ भी बाबा लोग जाते हैं उनके साथ उनके प्रवचनों के प्रचार के लिए वीडियो/आडियो कैसेट, साहित्य, दवाईयाँ आदि के बाजार भी साथ-साथ चलते हैं। बेशक बाबा लोगों ने संसार से संन्यास ले लिया हो लेकिन अपने प्रवचनों के दौरान चुटकले सुनाना, आँखें मटकाना, नाचना तथा गाना ये कभी नहीं भूलते। कोई बाबा तो चाँदी के मुकुट भी पहन लेता है। ये बाबा लोग काम, क्रोध, लोभ, अहंकार के अधीन ना हों, हो ही नहीं सकता। इनमें से जब कोई अनाड़ी बाबा यौन शोषण के मामले में पकड़ा जाता है तो उसके अनाड़ीपन पर हँसी आती है। कुछ बाबा लोग अपने मठ/गद्दी भी स्थापित कर लेते हैं। जैसे राजा का बेटा अपने पिता के वारिस के तौर पर गद्दी पर बैठता है, ठीक उसी तरह कोई कोई बाबा अपने बेटे या बेटी को अपना वारिस बनाकर उसके उज्ज्वल भविष्य की नींव रख जाता है। वैसे देखा जाये तो बाबा, (हरियाणा में इसे मोड़ा कहते हैं) बनने में कोई खर्च नहीं आता एक चिमटा एक कमण्डल तथा भगवे कपड़े पहनकर किसी भी घर के आगे अलख जगाओ, आशीष वचन बोलो और फिर देखो श्रद्धालुओं की भीड़ किस तरह सिर माथे पर बिठाती है। मेरी बहुत समस्याएँ हैं, पैसे की भी तंगी है, भाई मैं तो चला बाबा बनने।

मकान नं. ९७५-बी/२०
राजीव निवास, शक्ति नगर, ग्रीन रोड,
रोहतक-१२४००१

शिक्षा दे रही जी, हमको रामायण अति प्यारी

साभार- शुद्ध रामायण

शिक्षा दे रही जी, हमको रामायण अति प्यारी।
एक समय में एक पुरुष ने, व्याहीं ज्यादा नारी,
वृद्धावस्था में दशरथ की इसने बात बिगारी।। शिक्षा ......
राज छोड़ वन गए रामजी, पितु आज्ञा सिर धारी,
अब तो पितु के लिए, पुत्र जन करते गारी ख्वारी।। शिक्षा ......
राज महल के सभी सुखों को, एक दम ठोकर मारी,
वन में गई पति के संग में, सिय सतवन्ती नारी।। शिक्षा ......
विपति समय में संग राम के, की लक्ष्मण ने तैयारी,
अब तो खून के प्यासे भाई, करें मुकदमे जारी।। शिक्षा ......
राज-तिलक को गेंद बनाकर, खेलन लगे खिलारी,
इधर राम, उस तरफ भरत, दोनों ने ठोकर मारी।। शिक्षा ......
चरण पादुका धरी तख्त पर, ये ही बात विचारी,
साधू बन कर रहा भरत, नहिं बना राज अधिकारी।। शिक्षा ......
राम लखन ने सूर्पणखाँ को, माता बोली पुकारी,
अब जहाँ देखें चिकनी मिट्टी, फिसल जायँ व्यभिचारी।। शिक्षा ......
लक्ष्मण शीश झुकाता था, कह सीता को महतारी,
हाय आजकल तो भावज को, कहते आधी नारी।। शिक्षा ......
लालच और तलवार से डरकर, सिया न हिम्मत हारी,
थोड़े भय से धर्म गमावें, हाय आजकल नारी।। शिक्षा ......
था पण्डित विद्वान् वो रावण, देखों आँख उघारी,
मदिरा मांस परनारि-हरण, से राक्षस बना अनारी।। शिक्षा ......
तन-मन से था सेवा करता, हनुमान् बलधारी,
अब तो मुँह पर करे खुशामद, पीछे देवें गारी।। शिक्षा ......
भगत विभीषण ने भाई की, संगत बुरी बिसारी,
अच्छी संगत में तुम जाओ, कहते 'चन्द्र' पुकारी।। शिक्षा ......

सफल जीवन

बाल्यावस्था एवं युवावस्था को पार करते हुए व्यक्ति जब वृद्धावस्था के निकट पहुँच जाता है, तो उसका शरीर क्षीण और दुर्बल होने लगता है, किन्तु उस समय भी उसका मन उल्लसित रहता है। उसका वह उल्लास स्थायी सम्पत्ति के समान जीवन के अन्त तक उसका साथ देता है। उस समय भी उसकी विनम्रता का भण्डार समय के दुष्प्रभाव से बचा रहता है, अर्थात् उसके हृदय का उल्लास व उसकी विनम्रता नष्ट नहीं होते। इन दोनों के संयोग से ही उसे अपने जीवन के अतिरिक्त परलोक में भी उत्कृष्ट फल प्राप्त होता है। उल्लास और विनम्रता कभी नष्ट न होने वाली परमेश्वर की देन हैं, जिनके सम्मुख संसार की अन्य सम्पत्तियाँ नगण्य एवं तुच्छ हैं।

किसी व्यक्ति से जब कोई बलिदान माँगा जाये, तो वह उसकी परीक्षा की घड़ी होती है। उस समय यह देखा जाता है कि वह व्यक्ति अपने आदर्श की प्राप्ति के लिए कितना बलिदान करने को तैयार है। आप कह सकते हैं कि आप अमुक काम करने के लिए तैयार हैं, किन्तु प्रश्न यह है कि आप अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कितना बलिदान दे सकते हैं? कथनी और करनी में बहुत अन्तर होता है। अनेक लोग कहते हैं कि यदि उन्हें सामाजिक झंझटों से मुक्ति मिल जाये, उनके मार्ग में कोई बाधा न रहे, उन्हें बीमारी एवं दरिद्रता की आशंका न हो, तो वे भी अनेक महान् कार्य कर सकते हैं, परन्तु सच्चाई इसके सर्वथा विपरीत है। संसार में काम करने वालों की बहुत कमी है। महान् काम उन्होंने ही सम्पन्न किये हैं, जो प्रतिकूल परिस्थितियों में रहकर अपने जीवनोद्देश्य की प्राप्ति के निरन्तर प्रयास करते रहे। इसके साथ ही वे लोग अनेक कष्टों, संकटों और पीड़ाओं से भी घिरे रहे। अनेक व्यक्ति यह इच्छा करते हैं कि यदि उन्हें कोई अवसर प्राप्त हो, तो वे कोई महान् कार्य करके दिखा सकते हैं, परन्तु जब उन्हें अवसर प्राप्त होता है, तो वे कुछ भी नहीं कर पाते। सभ्यता और संस्कृति के शिखर पर पहुँचने वाले युवक और बुद्धिमान् व्यक्तियों ने घोर संघर्ष किये, जिनके कारण उन्हें अपने जीवन में कभी अवकाश के क्षण भी प्राप्त नहीं हुए।

सामान्यतः यह माना जाता है कि व्यस्त एवं सक्रिय जीवन-संघर्ष के कारण व्यक्ति की प्रवृत्ति नीरस हो जाती है व उसकी सौन्दर्यानुभूति नष्ट हो जाती है अथवा कुछ बुद्धिमान व्यक्ति ही जीवन की मृदुल भावनाओं की तह तक पहुँच सकते हैं, परन्तु वास्तविकता यह है कि लालित्यपूर्ण चमत्कार संकटों और विपत्तियों से घिरे रहने वाले व्यक्तियों ने ही किए हैं। दरिद्रता और विपत्तियों में फँसे विद्वानों ने ही संसार के सर्वश्रेष्ठ एवं महान् ग्रन्थ लिखे हैं। विपरीत परिस्थितयों में पड़ने के बाद भी न तो व्यक्ति की प्यास बुझती है और न उसके आदर्श नष्ट होते हैं। जब तक व्यक्ति स्वयं न चाहे, कुछ नहीं किया जा सकता।

कुछ व्यक्ति जीवन को एक कला मानते हैं, परन्तु अनेक व्यक्ति जीवन के कार्यों को अनिच्छापूर्वक ही पूरा कर सकते हैं। वे अपने बहुमूल्य समय और प्रयत्न को निम्न उद्देश्यों तथा वासना की पूर्ति में ही नष्ट कर डालते हैं। यदि वे अपने प्रयत्नों को उत्साहपूर्वक पवित्र उद्देश्यों की पूर्ति में लगा दें, तो वे भी महान् कार्य कर सकते हैं, जीवन को जीने की कला सीख सकते हैं। जीवित रहने के लिए व्यक्ति अपनी मानसिक और शारीरिक योग्यता को केवल धन कमाने के लिए ही नियोजित कर दे, इसे बुद्धिमानी नहीं कहा जा सकता। परमात्मा ने जो जीवन आपको प्रदान किया है, वह इतना निरर्थक नहीं कि आप अपने मूल्यवान समय को भौतिक पदार्थों के संग्रह में ही नष्ट कर दे, किन्तु व्यक्ति का अधिकांश समय इस प्रकार के क्षणभंगुर पदार्थों के सग्रंह में ही नष्ट हो जाता है। फिर भी उसे इस बात की अभिलाषा होती है कि वह अपने महान् आदर्शों को प्राप्त कर ले। धन-दौलत और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति बड़े से बड़ा बलिदान कर सकता है, लेकिन आत्मा की श्रेष्ठता और व्यापकता के लिए कुछ भी नहीं कर

पाता। जीवन-रूपी गाड़ी को चलाने के लिए उद्देश्य और संकल्प एक सीमा तक ही आवश्यक होते हैं, किन्तु जब तक इच्छा-प्राप्ति के लिए प्रयास नहीं किया जायेगा, तब तक रेलगाड़ी नहीं चल सकेगी। साधारण गरम पानी से इजंन नहीं चल सकता। जब आपकी दृष्टि ही छोटे-छोटे पदार्थों पर टिकी रहेगी, तो आपको अपने आस-पास की चीजें ही दिखाई देंगी, उच्च और महान् उद्देश्य दूर दिखाई देंगे। ये छोटे-छोटे पदार्थ और साधारण उद्देश्य आपके लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक बन जाते हैं। अनेक व्यक्ति साधारण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उनमें हेडक्लर्क, वकील अथवा इंजीनियर यदि सफल व्यक्ति भी होते हैं, परन्तु वे भी अपने उच्च आदर्श को प्राप्त नहीं कर पाते और साधारण पदार्थों की प्राप्ति के लिए अपने जीवन का बलिदान कर देते हैं, अपनी स्वाभाविक योग्यता को धन-दौलत आदि की वेदी पर निछावर कर देते हैं, अपने महान् उद्देश्यों को सोने-चांदी के चन्द सिक्कों के बदले बेच डालते हैं। इसीलिए वे मानव के रूप में भी असफल और अभागे ही सिद्ध होते हैं।

यह आवश्यक नहीं कि धन को नैतिकता से अधिक महत्व दिया जाये, लेकिन साधारण प्रसिद्धि और सामान्य विचारों के कारण व्यक्ति लोक कल्याण के मार्ग से भटक जाता है। आपका जीवन और उसका वास्तविक उद्देश्य सच्चे मोती के समान है। उसके सम्मुख सांसारिक सुख अत्यन्त तुच्छ है। मानव-जीवन का आदर्श अत्यन्त बहुमूल्य है और उसकी चमक के सम्मुख सोने-चांदी की चमक हेय है। लोक-कल्याण के लिए जिन लोगों के नाम सूर्य के समान दमकते रहे हैं, उनके सम्मुख सदा ही उच्च लक्ष्य और आदर्श स्थिर रहे हैं। उन्होंने अपने उद्देश्य से कभी मुँह नहीं मोड़ा और अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्थिरता और दृढ़ता के साथ अपनी भरपूर शक्ति लगाते रहे। यदि आप भी अपनी आत्मा की उस आवाज को सुनते रहें, जो आपको सफलता के मार्ग की खोज करने के लिए प्रेरित करती है और उसी के अनुसार व्यवहार भी करें, तो आप कभी असफल नहीं हो सकते। जीवन में सर्वोच्च सफलता प्राप्त करने के लिए निष्ठा और सक्रियता महान् आदर्श हैं। अब वह समय दूर नहीं, जब मानव की सेवा और उसके सुधार के लिए सब कुछ बलिदान कर देने वाले व्यक्तियों को अत्यन्त सफल माना जावेगा।

धन का ढेर अथवा बैंक-बैलेंस नहीं, अपितु त्याग और बलिदान आपकी वास्तविक सम्पत्ति हैं। दानशील और परमार्थी व्यक्ति पारसमणि के समान होते हैं। उनका सम्पर्क होते ही कोई भी वस्तु सोना बन जाती है। ऐसे व्यक्तियों के सम्पर्क में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह अनुभव हो जाता है कि उसने कुछ खोया नहीं है, अपितु कुछ पाया है। देखा जाये, तो जो व्यक्ति जीवन को सुखद बनाने एवं मानवता का कल्याण करने के लिए प्रयत्न करते हैं, वे ही कभी नष्ट न होने वाली सम्पत्ति हैं।

आज ऐसे ही अनेक यन्त्रों का आविष्कार हो चुका है, जिनके द्वारा शारीरिक शक्ति के खर्च में कमी आ गयी है, किन्तु सफल जीवन को मापने अथवा गुणों का अनुमान लगाने के लिए अभी तक कोई यन्त्र नहीं बना। यदि कोई ऐसा यन्त्र बन जाता, तो अनेक धनाढ्य लोग अपनी माप देखकर क्रोधित हो जाते तथा अनेक देशभक्त अपनी प्रतिभा और सेवा का माप देखकर चकित रह जाते। किसी व्यक्ति की महत्ता का अनुमान उसकी आत्मा के मानदण्ड से किया जाना चाहिये। धन-सम्पत्ति, गगनचुम्बी इमारतें या बड़ी-बड़ी जागीरें नहीं, अपितु नैतिक मूल्यों के आधार पर ही किसी व्यक्ति का जीवन लाभदायक बन सकता है। सज्जनता, सहृदयता और संस्कृति के बल पर ही आप अपने विरोधियों का मुँह बन्द कर सकते हैं, धन-सम्पत्ति के बल पर नहीं।

फिलिप ब्रुक्स ने लिखा है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी वर्तमान स्थिति में एक बार यह अनुभव अवश्य होता है कि उसे क्या बनना है। उसे अपने सम्पूर्ण जीवन का कल्पित स्रोत अवश्य दिखाई देता है। परमात्मा ने मानव के हृदय में किसी न किसी लक्ष्य की स्थापना की है। इसलिए कम-से-कम एक बार उसके मन में कल्याण, परोपकार एवं दूसरों की भलाई करने की इच्छा अवश्य जागृत होती है।

साभार- उठो, हिम्मत करो, आगे बढ़ो

समाचार

वैदिक मिशन, मुम्बई द्वारा आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रांगण में १८ व १९ मार्च २०१७ को 'वेदों में चिकित्सा विज्ञान' विषय पर एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में भाग लेने के लिए भारत भर से प्रसिद्ध संन्यासीगण, विद्वान् व डॉक्टर पधारे थे। जिनमें स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, डॉ. सूर्या देवी, डॉ. पवित्रा, डॉ. श्वेतकेतु, डॉ. सहदेव आर्य, डॉ. विनायक तायड़े आदि प्रमुख थे।

इस कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई के प्रधान श्री मिठाईलाल जी एवं मंत्री श्री अरुण अब्रोल जी भी उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि वेदों में अनेक प्रकार का ज्ञान भरा पड़ा है। उसी प्रकार चिकित्सा पद्धति के बारे में भी समस्त जानकारी उपलब्ध है। विद्वानों ने बताया वेदों के अनेक मन्त्रों में यज्ञ चिकित्सा भी बताई गई है। जिससे हम भिन्न-भिन्न जड़ी-बूटियों को हवन में डालकर अनेक व्याधियों से मुक्त हो सकते हैं।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 'वेद-वेदांत ज्योतिष' पुस्तक का विमोचन भी किया गया। अंत में वैदिक मिशन के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने सबका धन्यवाद किया।

– संदीप आर्य, मंत्री

भव्य रैली सम्पन्न

आर्यसमाज, हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय की ओर से महर्षि दयानन्द जयन्ती के अवसर पर हिरण मगरी क्षेत्र में बालिकाओं और आर्य जनों द्वारा एक भव्य रैली सम्पन्न निकाली गई। विद्यालय की मानद निदेशिका श्रीमती पुष्पा सिन्धी के निर्देशन में सम्पन्न इस रैली में बालिकाऐं, शिक्षिकाऐं एवं आर्यजन सामाजिक कुरीतियों, यथा अन्धविश्वास, नशा मुक्ति, नारी शिक्षा, बेटी बचाओ, पर्यावरण रक्षा, भ्रष्टाचार मिटाओ आदि पट्टिकायें लिये नारे लगाते चल रहे थे। श्रीमती राधा त्रिवेदी एवं कृष्ण कुमार सोनी ने दयानन्द सरस्वती के जीवन पर आधारित भजन प्रस्तुत किये। समापन पर विद्यालय संरक्षक डॉ. अमृत लाल तापड़िया एवं श्रीमती शारदा गुप्ता ने दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुये महर्षि को वेदोद्वारक, सच्चा राष्ट्र भक्त एवं समाज सुधारक निरूपित किया। प्रारम्भ में श्रीमती मेनारिया ने सबका स्वागत किया एवं आर्यसमाज की मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर रैली मार्ग में श्रीमती एवं निरंजन नेभनानी ने सभी सम्भागियों को अल्पाहार प्रदान कर स्वागत किया। कार्यक्रम के पश्चात् सामूहिक सहभोज का आयोजन रखा गया।

– रामदयाल मेहरा, प्रचार मंत्री

२३ मार्च। आर्य परिवार संस्था, कोटा के तत्वावधान में अमर शहीद भगत सिंह, राज गुरु व सुखदेव का शहीदी दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इसमें प्रथम वीर कमान्डर चेतन चीता, जो कश्मीर श्रीनगर में चार आतंकवादियों को मारते हुये बहुत घायल हो गये, के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु कामना की गयी। पं. रामदेव के पौरोहित्य में हुए अग्निहोत्र में अथर्ववेद के आयुष्मान मन्त्रों से विशिष्ट आहुतियाँ दी गयीं। पश्चात् चेतन जी के पिताश्री राम गोपाल चीता ने आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ का विस्तार से वर्णन किया कि कैसे दस-दस गोलियाँ लगने के बाद भी चेतन उन्हें मारता जा रहा था। वरिष्ठ वैदिक विद्वान् श्री शिव नारायण उपाध्याय ने अमर शहीदों भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव के क्रान्तिकारी जीवन पर प्रकाश डाला। संयोजक श्री राजेन्द्र आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

बोध से ही उन्नति

आर्यसमाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव (महाशिवरात्री) पर अपने उद्बोधन में मुख्य वक्ता डॉ. प्रेमचन्द्र गुप्त ने कहा कि मानव को बोध, ज्ञानपूर्वक कर्म करते हुए उन्नति पथ पर बढ़ते रहना चाहिये। बुद्धिमान मनुष्य भी बोध से भटक कर निम्न कर्म में प्रवत्त हो जाते है। दयानन्द सरस्वती आज ही के दिन से प्रेरणा पाकर सच्चे शिव की खोज मे निकल गये और समाज का कल्याण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. राकेश एरन ने की। आपने अपने उद्बोधन में समय के महत्व पर प्रकाश डालते हुए निर्मल वास्तविक जीवन जीने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर साहित्य एवं समाज सेवा के लिए श्री गोविन्द मेडतवाल एवं श्रीमती इन्दु मेडतवाल का सम्मान किया।

– रामदयाल मेहरा, प्रचार मंत्री

वासंती नवसस्येष्टि पर्व पर पंचकुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज, हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा १२ मार्च २०१७ को वासंती नवसस्येष्टि पर्व पर के अवसर पर श्री इन्द्र प्रकाश यादव के पौरोहित्य में पंचकुण्डीय यज्ञ का अनुष्ठान सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर बालक श्रेयस अरोड़ा के जन्म दिवस एवं श्री भूपेन्द्र शर्मा दम्पति के विवाह की वर्षगाँठ के उपलक्ष में विशेष आहुतियाँ दी गई।

समारोह में श्री इन्द्र देव पीयूष द्वारा प्रभु भक्ति एवं होली पर्व पर भजन प्रस्तुत किये गये। श्री अशोक जी आर्य ने अपने उद्बोधन में सामाजिक समरसता के इस पर्व की महत्ता बताते हुये आपसी मतभेद द्वेष आदि भुलाकर परस्पर प्रेम और सौहार्द से संगठित रहने का आह्वान किया। भक्त प्रह्लाद के प्रकरण को उद्धरित करते हुये उन्होंने ईश्वर के प्रति दृढ़ आस्था रखने का सन्देश दिया। समारोह की अध्यक्षता श्री भंवर लाल आर्य ने की एवं आभार मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने व्यक्त किया, संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

– श्रीमती ललिता मेहरा, मंत्री

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र., तेलंगाना के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक २ से ४ फरवरी २०१७ में वैदिक कन्या गुरुकुल, कुन्दनबाग, बेगमपेट, हैदराबाद में उक्त सम्मेलन अत्यन्त भव्यता एवं सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस हेतु

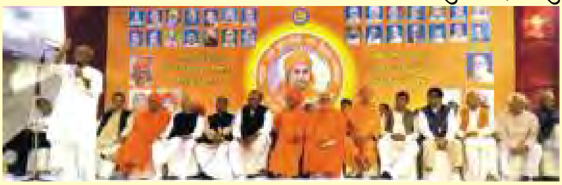

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश व आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश के प्रधान प्रो. विट्ठलराव साधुवाद के पात्र हैं। श्री विट्ठलराव के नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता जिस समर्पण के साथ लगे थे, उसे देख आँखों में प्रसन्नता व उत्साह की लहर दौड़ जाती थी। समारोह के मुख्य अतिथि शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे माननीय किरणजीत सिंह ने जब भगत सिंह जी के जीवन के प्रसंग सुनाए तो आर्यजनों से खचाखच भरा पण्डाल राष्ट्रभक्ति की अजस्र धारा में सराबोर हो गया।

इस अवसर पर विभिन्न गुटों के भेद भुलाकर जिस प्रकार तीनों सभाओं के अधिकारी उपस्थित थे, सहभागी थे वह स्वयं आर्यसमाज के आने वाले स्वर्णिम 'कल' की दास्तान लिख रहे थे।

आर्य नेताओं, संन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों की अभूतपूर्व उपस्थिति थी। कुछ प्रमुख नाम निम्न हैं-

स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, सर्वश्री सुरेशचन्द्र आर्य, बाबू मिठाई लाल सिंह, प्रो. विट्ठलराव, प्रकाश आर्य, अरुण अब्रोल, विनय आर्य, देवेन्द्रपाल वर्मा, सत्यव्रत सामवेदी, माया प्रकाश त्यागी, विरजानन्द, डॉ. अनिल आर्य, हवासिंह आर्य, ओम प्रकाश वर्मा, सरोज वर्मा, रामेन्द्र जी गुप्ता, रामस्वरूप रक्षक, खुशहाल चन्द्र आर्य, पण्डित शिवनारायण उपाध्याय, किरणजीत सिंह, डॉ. वेदप्रताप वैदिक, डॉ. आनन्द कुमार (आई.पी.एस.), डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ. वसुधा शास्त्री, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. महावीर मीमांसक, डॉ. वीरपाल, ठा. विक्रम सिंह, डॉ. कैलाश कर्मठ, डॉ. पवित्रा वेदालंकार, आचार्य बलवीर शास्त्री, बहन पूनम आर्या, प्रवेश आर्या, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, आचार्य दयासागर, जीववर्धन शास्त्री, आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, पं. धर्मपाल शास्त्री, देव शर्मा वेदालंकार, प्रिंसिपल सदाविजय आर्य, स्वामी रामवेश, स्वामी चन्द्रवेश, ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र आर्य आदि। इन सभी ख्यातनाम विद्वानों के सान्निध्य में आर्य समाज के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों से निबटने तथा राष्ट्रोन्नति में आर्य समाज की सार्थक भूमिका पर खुलकर विचार-विमर्श व मंथन हुआ। निष्कर्षतः जो प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुए वे इसी अंक में दिए जा रहे हैं।

- अशोक आर्य, सम्पादक 'सत्यार्थ सौरभ'

आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्रप्रदेश, सुल्तान बाजार, हैदराबाद के चुनाव सम्पन्न

सर्वसम्मति से ठाकुर लक्ष्मण सिंह जी प्रधान और विट्ठल राव आर्य मंत्री निर्वाचित

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन हैदराबाद की घोषणा

सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित

सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण ही मान्य

हैदराबाद का राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किसी भी प्रकार के बदलाव की घोर निन्दा करता है और इस प्रकार के कुकृत्य को अविलम्ब बन्द करने की माँग करता है। सम्मेलन में सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण को ही मान्यता प्रदान करते हुये अन्य संस्करणों को अवैध घोषित किया गया। यह भी निश्चय किया गया कि सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार के लिये पूरे देश में विशेष अभियान चलाया जाए। सम्मेलन के संयोजक आचार्य सोमदेव शास्त्री जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया।

साभार- आर्य जीवन 'पाक्षिक'

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०२/१७ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०२/१७** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री इन्द्रजित देव; यमुनानगर (हरि.), श्री पृथ्वी वल्लभ देव सोंलकी; उज्जैन (म.प्र.), श्री रमेश आर्य; गुरदासपुर (पंजाब), श्री अच्च्युता हरकाल; अहमदनगर (महाराष्ट्र), वासुदेव भाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); डिसा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात), वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात), श्री बीरेन्द्र कर; भुवनेश्वर (उडिसा), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), श्री जीवन लाल आर्य; दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; शाहपुरा (राज.), हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री संजय आर्य; सोनीपत (हरियाणा), श्री हर्ष वर्द्धन कुमार आर्य; नेमदारगंज, (बिहार), श्री जगदीश प्रसाद हरित; मन्दसौर (म.प्र.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजयनगर (राज.), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्री सरस्वती प्रसाद गोयल; सवाईमाधोपुर (राज.), श्रीमती सुनीता सिंह भदौरिया; ग्वालियर (म. प्र.), श्री गोवर्धनलाल झँवर; सिहोर (म. प्र.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १९ पर अवश्य पढ़ें।

अखरोट महौषधि

अखरोट में सोडियम बहुत कम और कोलेस्टराल बिल्कुल भी नहीं होता। इसमें भरपूर मात्रा मे ओमेगा-३ फैटी एसिड्स (हेल्दी फॅट्स) पाए जाते हैं। इनके अलावा ये विटमिन्स का खजाना होते हैं। इनमें प्रोटीन भी अच्छी मात्रा में पायी जाती है। इसके अलावा मिनरल्स जैसे कॅल्शियम, मॅग्नीश्यम, आयरन, फास्फोरस, जिंक, कापर आदि भी प्रचुर मात्रा में होते हैं।

अखरोट के फायदे

अखरोट की गिरी में ढेर सारे न्यूट्रियेंट्स पाए जाते हैं जो कि सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। इसलिए इन्हें नियमित रूप से खाने के कई फायदे होते हैं उनमें से कुछ नीचे दिए गये हैं-

दिमाग की सेहत करे अच्छी

आप जानते होंगे प्रकृति में कुछ चीजें अपने आकार, रंग और सुगंध से हमें उनमें छिपे गुणों के बारे में संकेत देती हैं। जैसे अखरोट की शक्ल हमारे दिमाग से मिलती जुलती होती है इसलिए उसे खाने पर हमारा दिमाग तेज और चुस्त बनता है। तो जो विद्यार्थी दिमाग तेज, चुस्त व स्मरण शक्ति बढ़ाने की सोच रहे हैं उन्हें रोजाना कुछ अखरोट खाने चाहिए।

रोजाना ४ से ७ अखरोट सम्पूर्ण लाभ प्रदान करने में सक्षम हैं।

दिल रखे स्वस्थ

यदि आप दिल की बीमारी से बचना चाहते हैं और अपने दिल को स्वस्थ रखना चाहते हैं तो आज से ही कुछ अखरोट रोज खाना शुरू कर दीजिए। क्योंकि अखरोट में पाया जाने वाला ओमेगा-३ तथा ALA कई प्रकार के दिल के रोग को दूर रखने में हमारी मदद करता है।

इन्हें खाने से आपके शरीर में बुरा कोलेस्टराल कम होता है और अच्छा कोलेस्टराल बढ़ जाता है, जो कि हार्ट के लिए अच्छा होता है।

इनमें मौजूद ओमेगा-३ तथा ALA खून का थक्का (ब्लड क्लाट्स) बनने से रोकते हैं। शोध के अनुसार जो लोग अखरोट का सेवन करते हैं उनमें हार्ट अटैक के कारण मृत्यु की संभावना ५० प्रतिशत कम होती है।

ये आपके हाइ ब्लड प्रेशर को भी नार्मल करने में मदद करते हैं।

मधुमेह को करे नियन्त्रित

यदि आपको हाई ब्लड शुगर की परेशानी है तो आप अखरोट का सेवन करके उसे नियन्त्रण में रख सकते हैं। इन्हें रोजाना खाने से टाइप२ डायबिटीज में काफी फायदा मिलता है। एक रिसर्च के अनुसार कुछ अखरोट रोजाना खाने से मोटे लोगों में फास्टिंग शुगर टेस्ट नार्मल आया। उन्होंने इस ड्राइ फ्रूट को लगातार ३ महीनों तक खाया था।

कैन्सर से सुरक्षा

अखरोट एक अच्छा एन्टी-कैन्सर फूड है। एक शोध के अनुसार नियमित अखरोट के सेवन से प्रोस्टेट कैन्सर ट्यूमर में ३०-४० प्रतिशत कमी आती है।

नींद लाए - अनिद्रा भगाए

कुछ लोगों को नींद नही आती और वो रात भर इधर उधर करवट बदलते रहते हैं। अखरोट में मेलेटोनिन नामक हार्मोन होता है जो कि नींद लाने मे मदद करता है।

नोट- कुछ लोग अखरोट की गिरी का छिलका उतार देते हैं। ऐसा बिल्कुल नही करना चाहिए। इस स्किन (छिलके) मे ९० प्रतिशत एंटी आक्सिडेंट्स मौजूद होते हैं। ये छिलका अखरोट का सबसे पौष्टिक भाग होता है। इसलिए जब भी गिरी खायें तो उसे अखरोट से निकालकर सीधे ही खा लें।

साभार - अन्तर्जाल

आशा ही जीवन है

कथा सरित

एक कमरे में चार मोमबत्तियाँ हौले-हौले जल रहीं थीं। माहौल इतना शान्त था, कि आप उन्हें बोलते सुन सकते थे।

पहली मोमबत्ती 'शान्ति' थी।

आजकल मुझे कोई नहीं चाहता, उसकी लौ अफसोस से फुसफुसाई। 'दुनिया गुस्से और तकरार से भर गयी है।'

धीरे-धीरे वह कम होती गयी और फिर पूरी तरह बुझ गयी।

दूसरी मोमबत्ती 'आस्था' थी।

किसी को मेरी जरूरत नहीं, वह बुदबुदाई। 'भरोसा मर चुका है, विश्वास इस दुनिया से उठ चुका है।'

अनचाही, अनदेखी, उसकी लौ भी धीरे-धीरे कमजोर पड़ गई। एक आखिरी बार भभक कर, वह भी दम तोड़ गई।

तीसरी मोमबत्ती 'मुहब्बत' थी।

'मैं कितनी बेबस हो गई हूँ,' सोचते हुए वह मायूसी से कसमसाई। 'लोग मेरी कदर नहीं करते, किसी के पास मेरे लिए अब बख्त नहीं। औरों की तो छोड़ो, लोग अपनों से भी प्यार करना भूल गए हैं।'

भावावेग से घुट कर वह भी छटपटाई, और हमेशा के लिए शान्त हो गयी।

वह अभी बुझी ही थी, कि एक अबोध बच्चा कमरे में आ पहुँचा। उसने देखा कि चार मोमबत्तियों में से तीन तो बुझ चुकी हैं। दीवारों पर रेंगती परछाइयाँ, अब उसकी ओर लपकीं। बढ़ते अंधियारे से यकायक घबराकर, वह मासूम रुआंसा हो गया।

तुम क्यों नहीं जल रहीं? उसने बुझी मोमबत्तियों से रोकर गुहार की। तुम्हें तो आखिर तक मुझे रोशनी दिखानी थी।

चौथी मोमबत्ती की लौ यह सुन कर लपलपा उठी।

घबराओ नहीं, उसने धीरे से कहा। 'मैं आशा हूँ', और जब तक मैं बाकी हूँ, निराशा की कोई बात नहीं, हम बाकियों को फिर से जगा लेंगे।

आँसू-भरी आँखों से, बच्चे ने जलती हुई आखिरी मोमबत्ती को निहारा। हिलाने से कहीं वह बुझ न जाए, इस डर से वह जड़वत वहीं खड़ा रहा।

यहाँ आओ बच्चे, 'आशा' ने करुणा से फिर उसे बुलाया। बहादुर बनो। देखो, मैं अभी तक जिन्दा हूँ, भली-चंगी हूँ।

बालक ने कातरता से उसे उठाया, और बाकी मोमबत्तियों को उससे जला लिया। जिन्दगी फिर से रोशन हो उठी, और कमरे के दूर-दराज कोनों से अँधेरा गायब हो गया।

खुशी उसके दिल में वापिस लौट आई, और वो हिम्मत और सुकून फिर पा गया।

जब तक आशा है, हम सब शान्ति, आस्था और मुहब्बत के साथ फिर से जी जायेंगे। अँधेरे से उबर आयेंगे, जीवन को फिर से संभाल पाएँगे।

साभार- Taletown.org

हैदराबाद घोषणा (राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन)

हैदराबाद का घोषणा पत्र

१. आर्य समाज देश में पूर्ण शराबबन्दी आन्दोलन चलायेगा। इसके लिये पूरे देश में जन-जागृति अभियान चलाकर व्यापक जन-समर्थन जुटाकर केन्द्र सरकार पर दबाव बनायेगा कि वह पूर्ण शराबबन्दी के लिए राष्ट्रीय नीति घोषित करे।

२. निरन्तर बढ़ते जा रहे धार्मिक पाखण्ड और अन्धविश्वास के कारण धर्म परायण जनता का शोषण हो रहा है जो भारतीय संविधान की भावना के भी विपरीत है। आर्य समाज धर्म के नाम पर प्रचलित पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलायेगा और शास्त्रार्थ परम्परा को पुनर्जीवित करेगा।

३. नर-नारी समता आर्य समाज का महत्वपूर्ण विषय रहा है। अतः हर स्तर पर हो रहे नारी उत्पीड़न जैसे कन्या भ्रूणहत्या, दहेज हत्या, बलात्कार, घरेलू हिंसा तथा नारी के अपमान के विरुद्ध आर्य समाज व्यापक जन-जागृति अभियान चलायेगा।

४. अपनी उदरपूर्ति एवं जिह्वा के स्वाद के लिए गौ एवं अन्य पशु-पक्षियों की निर्मम हत्या करके मांस-भक्षण से मानव समाज में बढ़ती हुई हिंसा की प्रवृत्ति के विरुद्ध आर्य समाज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलायेगा तथा शाकाहार का व्यापक प्रचार करेगा।

५. आर्य समाज की प्रारम्भिक इकाई अर्थात् स्थानीय आर्य समाज, आर्य समाज के गुरुकुल एवं विद्यालय तथा युवा संगठनों को सक्रिय करने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रान्तीय सभाओं के माध्यम से महत्वाकांक्षी योजना तैयार करेगी और लाखों युवाओं (युवक-युवतियों) को आर्य समाज का सदस्य बनाया जायेगा।

सत्यार्थ-पीयूष

मंत्रियों की योग्यता

महामना चाणक्य जी अमात्यों की नियुक्ति के बारे में लिखते हैं- 'नियुक्ति से पूर्व राजा प्रमाणित, सत्यवादी एवं आप्त पुरुषों के द्वारा उनके निवास स्थान और उनकी आर्थिक स्थिति की जानकारी करे। सहपाठियों के माध्यम से उनकी योग्यता शास्त्रीय प्रतिभा की, नए-नए कार्य सौंप कर उनकी बुद्धि, स्मृति और चतुरता की, व्याख्यानों तथा संभागों द्वारा उनकी वाक्पटुता, प्रगल्भता तथा प्रतिभा की, आपत्ति प्रस्तुत करके उनके उत्साह, प्रभाव तथा सहनशक्ति की, व्यवहार से उनकी पवित्रता मित्रता एवं दृढ़ स्वामिभक्ति की, सहवासियों तथा पड़ोसियों के माध्यम से उनके शील, बल, स्वास्थ्य, गौरव, अप्रमाद तथा स्थिरवृत्ति की जानकारी करे। उनके मधुरभासी स्वभाव तथा द्वेषरहित स्वभाव की परीक्षा राजा स्वयं करे। यही नहीं वे एक गुप्त विधि के माध्यम से भी उनकी परीक्षाओं का निर्देश देते हुए आगे कहते हैं-

'गुप्त धार्मिक उपायों से अमात्य के हृदय की पवित्रता की परीक्षा करें, गुप्त आर्थिक लोभ की बातें, गुप्त काम सम्बन्धी आकर्षणों से गुप्त भयादि प्रदर्शित करके अमात्यों के हृदय की पवित्रता की परीक्षा करें। गुप्तचरों द्वारा इतनी परीक्षाएँ करने के बाद ही उस व्यक्ति को यथायोग्य अमात्य कार्य पर नियुक्त करें।'

इस प्रकार की कड़ी परीक्षाएँ यदि आज भी प्रचलित हो जाएँ तो भ्रष्टाचार और अनाचार रहित राज्य की स्थापना हो सकती है। वेद में भी इसी प्रकार के अनेक आदेश हैं कि योग्य और पूर्ण धार्मिक लोगों को ही मन्त्री आदि के पद दिए जाएँ। अथर्ववेद (६-८८-३) के अनुसार-

ध्रुवोऽच्युतः प्र मृणीहि शत्रूञ्छत्रूयतोऽधरान्पादयस्व।
सर्वा दिशः संमनसः सध्रीचीर्ध्रुवाय ते समितिः कल्पतामिह॥

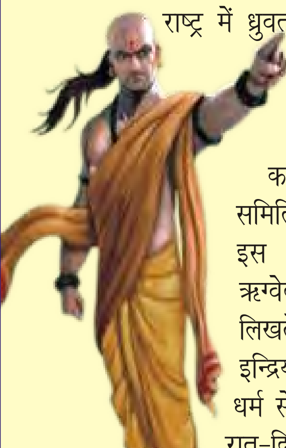

राष्ट्र में ध्रुवता आए उसके लिए ध्रुव निश्चय वाले, शत्रुओं से न मिलने वाले, राष्ट्र में स्थित सब दिशाओं के क्षेत्रों से छाँटे हुए उत्तम मन वाले, मिलजुल कर मन्त्रणा करने वाले इस राष्ट्र के ही नागरिकों से समिति बनाई जाए।

इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के राजनीति प्रकरण में लिखते हैं कि 'सब सभासद और सभापति इन्द्रियों को जीतें अर्थात् वश में रखकर सदा धर्म से वर्तें, और अधर्म से हटे, हटाये रखें। रात-दिन नियत समय में योगाभ्यास भी करते रहें क्योंकि जितेन्द्रिय अपनी इन्द्रियों को जीते बिना बाहर की प्रजा को वश में करने को समर्थ कभी नहीं हो सकता।' अपने इसी ग्रन्थ में इस सम्बन्ध में वे आगे लिखते हैं। 'महाविद्वानों को विद्या समाजाधिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्म समाजाधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राजसभा (मन्त्रिमण्डल) के सदस्य और सब में सर्वोत्तम गुण-कर्म-स्वभाव युक्त महान् पुरुष हो, उसको राजसभा का पतिरूपमान के सब प्रकार से उन्नति करें।'

राजा जिन राज पुरुषों व राज्य कर्मचारियों को प्रजा की रक्षा का तथा अन्य राज्य के कार्यों का अधिकार देवे, वे सुशिक्षित, पूर्व परीक्षित, धार्मिक विद्वान् और कुलीन हों। राजा को उचित है कि इन कर्मचारियों से यथायोग्य व्यवहार करे।

यहाँ महर्षि ने मनु स्मृति के श्लोक (७, १२३, १२४) का प्रावधान दिया है। क्योंकि प्रजा की रक्षा के लिये राजा द्वारा नियुक्त राज कर्मचारी प्रायः दूसरों के धन के लालची अर्थात् रिश्वतखोर और ठगी या धोखा करने वाले हो जाते हैं, राजा इस प्रकार की व्यवस्था करे जिससे वे राजा और प्रजा के साथ इस प्रकार का व्यवहार न कर पाएँ।

दोषी व्यक्ति को देश से निष्कासित कर ऐसे स्थान में रखने का आदेश दिया है, जहाँ से वे लौटकर न आ सकें। **'परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्'** की भाँति परिश्रमी तथा ईमानदार कर्मचारियों को पुरस्कृत तथा इसके विपरीत आचरण करने वालों को तिरस्कृत नहीं किया जायेगा, तो कर्मचारियों की सत्कर्म में प्रवृत्ति और दुष्कर्म से निवृत्ति नहीं होगी। अतः सबके साथ समान व्यवहार न होकर 'यथायोग्य' व्यवहार होना चाहिए।

यहाँ से आगे सेवानिवृत्त कर्मचारियों, अनाथों तथा विधवाओं के जीवनयापन, असहाय वृद्धों की सहायता तथा साधनहीन अन्य लोगों के योगक्षेम का प्रावधान किया गया है, जिससे राज्य में कोई अपने को दुःखी या असहाय अनुभव न करे। कौटिल्य ने अपने समय के मूल स्तर के अनुसार राजा और उसके परिजनों से लेकर मंत्रियो, अमात्यों, अध्यक्षों तथा निम्न स्तरीय चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों तक की भृत्ति का निर्धारण किया है। कौटिल्य के अनुसार धन और भूमि दोनों ही रूपों में भृत्ति दी जा सकती है, परन्तु भूमि के सम्बन्ध में यह शर्त रखी है कि उसे न गिरवी रखा जा सकता है और न बेचा जा सकता है।

सम्पादक- अशोक आर्य

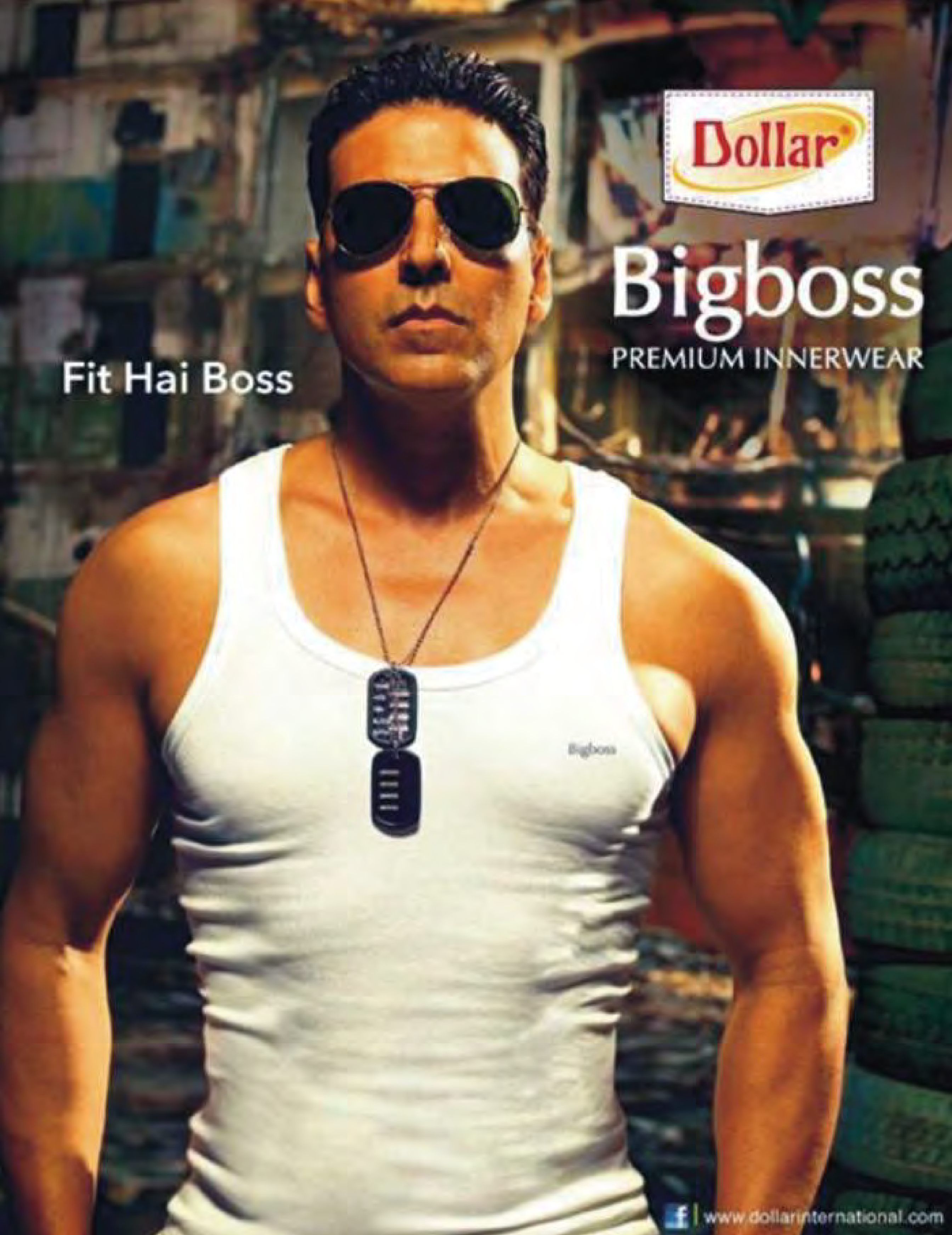
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarinternational.com

आठ वर्ष के हों, तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की शाला में भेज देवें।

– सत्यार्थप्रकाश पृ. ३७

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर